प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ़ एक्सीलेंस

शासकीय स्नातकोत्तर (अग्रणी) महाविद्यालय श्योपुर

ISBN NO.- 9789334113181

"शोध स्मारिका"

भारतीय ज्ञान परंपरा एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020"

संपादक

डॉ. लोकेंद्र सिंह जाट डॉ. सीमा चौकसे

प्रायोजक

उच्च शिक्षा विभाग, मध्य प्रदेश शासन, भोपाल

मुख्य संरक्षक

डॉ. कुमार रत्नम

अतिरिक्त संचालक उच्च शिक्षा
ग्वालियर-चम्बल संभाग, ग्वालियर (म.प्र)

संरक्षक एवं प्राचार्य

डॉ. बिपिन बिहारी शर्मा

शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
श्योपुर

मुख्य वक्तागण

डॉ. विमल किशोर

(सहायक प्राध्यापक) जीवन विज्ञान विभाग
कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय

मुख्य वक्तागण

डॉ. जान्हवी ओझा

(सहायक प्राध्यापक) प्राणी विज्ञान विभाग
किरोडीमल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

संयोजक
प्रो. गुमान सिंह

आयोजन सचिव
डॉ. लोकेंद्र सिंह जाट

शोध पत्र हेतु प्रस्तावित बिंदु (उप-विषय)

1. भारतीय ज्ञान परंपरा के राजनैतिक और ऐतिहासिक आयाम
2. भारतीय ज्ञान परंपरा में दर्शन आध्यात्म, विज्ञान, खगोलिकी, भौतिकी और गणित
3. भारतीय ज्ञान परंपरा में आयुर्वेद, योग, औषधि, वास्तुकला और अभियांत्रिकी
4. प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा में कला, साहित्य एवं संस्कृति
5. प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया
6. वैश्विक संस्कृति पर भारतीय ज्ञान परंपरा का प्रभाव
7. भारतीय ज्ञान परंपरा में सामजिक आर्थिक और वाणिज्यिक व्यवस्था
8. भारतीय ज्ञान परंपरा एवं व्यक्तित्व निर्माण, शारीरिक विकास और नैतिक मूल्य

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal - Equivalent to UGC Approved Journal ISSN No. 2456-6713

IEARJ
International Educational Applied Research Journal

9 789334 113181

भारतीय ज्ञान

परंपरा एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

13 अगस्त 2024

प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ़ एक्सीलेंस

शासकीय स्नातकोत्तर (अग्रणी) महाविद्यालय श्योपुर

संयोजक

प्रो. गुमान सिंह

आयोजन सचिव

डॉ. लोकेंद्र सिंह जाट

आयोजन समिति

डॉ. सीमा चौकसे
प्रो. आसिफ कुरेशी
प्रो. कमलेश निगम
डॉ. नेहा चौहान
प्रो. ज्योति शुक्ला
प्रो. विनीता डाबर
डॉ. रेखा सोलंकी
प्रो प्रेमचंद इक्का

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal - Equivalent to UGC Approved Journal ISSN No. 2456-6713

IEARJ
International Educational Applied Research Journal

मुख्य संरक्षक

डॉ. के. रत्नम

अतिरिक्त संचालक ग्वालियर-चंबल सम्भाग

संरक्षक एवं प्राचार्य

डॉ. बिपिन बिहारी शर्मा

शासकीय स्नातकोत्तर (अग्रणी) महाविद्यालय, श्योपुर, मध्य प्रदेश

मुख्य वक्ता

डॉ. विमल किशोर

(सहायक प्राध्यापक) जीवन विज्ञान विभाग कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय

मुख्य वक्ता

डॉ. जान्हवी ओझा

(सहायक प्राध्यापक) प्राणी विज्ञान विभाग
किरोडीमल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

प्रायोजक

उच्च शिक्षा विभाग, म.प्र. शासन, भोपाल

आईक्यूएसी प्रभारी

डॉ. रमेश भारद्वाज

तकनीकी समिति

डॉ. वीरेंद्र सिंह धाकड़ | **प्रो. महाराज सिंह धाकड़**

डॉ. दीपक शर्मा | **डॉ. लक्ष्मीकांत राय**

डॉ. साजिद अली

शुभकामना संदेश

डॉ. के. रत्नम्
अतिरिक्त संचालक
म.प्र. उच्च शिक्षा विभाग
ग्वालियर-चम्बल संभाग, ग्वालियर

मुझे यह जानकर बहुत ख़ुशी हो रही है शासकीय स्नातकोत्तर (अग्रणी) महाविद्यालय श्योपुर **"भारतीय ज्ञान परंपरा एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020"** विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन कर रहा है। यह सराहना करने योग्य है कि राज्य और देश के कई युवा शोधार्थी सम्मेलन में भाग लेंगे। मुझे आशा है, कि राष्ट्रीय संगोष्ठी के परिणाम निश्चित रूप से सभी प्रतिभागियों को **"भारतीय ज्ञान परंपरा एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020"** के बारे में आवश्यक दिशा -निर्देश और व्यवहारिक अनुसंशा प्रदान करेंगे।

मैं आयोजकों को बधाई देता हूँ, और संगोष्ठी की शानदार सफलता के लिए शुभकामनाएँ देता हूँ।

शुभकामना संदेश

डॉ. बिपिन बिहारी शर्मा

प्राचार्य

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है, कि शासकीय स्नातकोत्तर (अग्रणी) महाविद्यालय श्योपुर द्वारा **"भारतीय ज्ञान परंपरा एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020"** पर एक दिवसीय राष्ट्रीय वेबीनार का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर को स्मरणीय बनाने के लिए ई-प्रोसीडिंग भी प्रकाशित की जा रही है। जिसमें शोध पत्र एवं आलेखों को सम्मिलित किया जाएगा। इस राष्ट्रीय वेबीनार में देश व प्रदेश के कई विद्वान, विषय विशेषज्ञ भाग लेंगे एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य में "भारतीय ज्ञान की परंपरा" की आवश्यकता एवं वर्तमान समय में इस विषय की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला जाएगा।

मुझे पुर्ण विश्वास है, कि इस वेबीनार से युवा विद्यार्थी लाभंवित होंगे एवं अपने कार्यक्षेत्र में सफल होंगे। में राष्ट्रीय वेबीनार और ई-प्रोसीडिंग के प्रकाशन के लिए शासकीय महाविद्यालय, श्योपुर को अपनी अग्रिम शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

INDEX

Name of Author	Tittle of Paper	Page No.
डॉ. रेखा सोलंकी डॉ. मनीष कुमार सैनी	भारतीय शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान परंपरा का महत्व	01-03
डॉ. विकास शर्मा डॉ.भारती चौहान	भारतीय ज्ञान परंपरा में सैन्य शिक्षा का महत्व	04-06
डॉ. मनीष कुमार सैनी डॉ. राधा बड़ोले डॉ. किरन डंगवाल	वर्तमान परिदृश्य में भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता	07-08
CA UMESH KUMAR BHAVSAR	A REVIEW OF LITERATURE ON INDIAN PHILOSOPHY AND KNOWLEDGE	09-15
कमलेशचंद्र पाण्डे	भारतीय ज्ञान परंपरा में राष्ट्रीय नीति शिक्षा-2020 का महत्तव	16-18
MR. AJEET SINGH DR. GARIMA SRIVASTAVA	Ancient Indian Knowledge System in Botany	19-22
डॉ. योगेश कुमार बाथम डॉ. उर्मिला बाथम	'भारतीय ज्ञान परम्परा में शिक्षा नीति की भूमिका"	23-24
प्रकाश कुमार अहिरवार	भारतीय ज्ञान परंपरा और व्यावसायिक नेतृत्व: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में एक समग्र अध्ययन	26-28

भारतीय शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान परंपरा का महत्वः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. रेखा सोलंकी
असिस्टेंट प्रोफेसर
गृहविज्ञान विभाग
प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ़ एक्सीलेंस
(शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय)
श्योपुर, मध्यप्रदेश

डॉ. मनीष कुमार सैनी
असिस्टेंट प्रोफेसर
समाजशास्त्र विभाग
प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ़ एक्सीलेंस
(शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय)
श्योपुर, मध्यप्रदेश

सारांश -

इस अध्ययन के अन्तर्गत भारतीय शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान परंपरा का महत्व के विषय पर चर्चा की गई है। इस शोध पत्र में पाया गया है कि भारतीय संस्कृति एवं संस्कृत का मूल आधार ही भारतीय ज्ञान परंपरा है। भारतीय ज्ञान परंपरा भारत वर्ष में प्राचीनकाल से आ रही शिक्षा प्रणाली है । इसके अन्तर्गत वेद वेदांग, उपनिषद, श्रुति, स्मृति से लेकर विभिन्न प्रकार के विषयों में दर्शनशास्त्र, धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र, शिक्षाशास्त्र, नाटयशास्त्र, प्रबन्धन, चरक संहिता एवं विज्ञान विद्याशाखा इत्यादि के सभी ज्ञान भण्डार है । इसीलिए भारतीय ज्ञान परंपरा को गत्यात्मक तथा व्यापक जीवन प्रणाली के रूप में प्रस्तुत करते हुए भारत की गौरवशाली संस्कृति और परंपरा को स्थापित करेगा ।

मुख्यशब्द -

भारत, समाज, संस्कृति, भारतीय ज्ञान परंपरा एवं शिक्षा प्रणाली भारत, संस्कृति और संस्कृत यह तीनों शब्द मात्र शब्द नहीं अपितु प्रत्येक भारतीय के भाव ही है । भारत वर्ष के लिए कहा भी गया है-

₹देवतानांप्रियंधामतवाप्यस्तिममापिच।“

-अर्थात यह भारत भूमि देवताओं के साथ- साथ हम सभी की अतिप्रिय भूमि है । और इस भारत भूमि की जब प्रतिष्ठा की बात आती है तब पंक्ति उद्धृत होती है-

₹भारतस्य प्रतिष्ठेद्वेसंस्कृतंसंस्कृति ः तथा। ₹

-अर्थात भारत की दो मात्र प्रतिष्ठा पहली संस्कृत और दूसरी संस्कृति है जो कि एक दूसरे के पूरक ही हैं-

₹संस्कृति ःसंस्कृताश्रिता”

-अर्थातयह जो संस्कृति है, यह संस्कृत आश्रित ही है । 'यह भाषा राष्ट्रीय एकता, नैतिकता, अखण्डता एवं आध्यात्मिकता के महत्व को निरूपित करती हैं। भारतीय संस्कृतिक संरक्षण व संवर्धन हेतु भारतीय ज्ञान परंपरा का ज्ञान परम आवश्यक है। अत ः विद्यालयी पाठ्यक्रम में भारतीय ज्ञान परंपरा का ज्ञान अपरिहार्य है। अत एव राष्ट्रीय शिक्षानीति 2020' मैं भी बहु भाषावादको प्रासंगिक बताते हुए शिक्षा क्षेत्र के सभी स्तरो पर संस्कृत को जीवन जीने की मुख्यधारा में शामिल कर
अपनाने पर बल दिया गया है । अत ः संस्कृत का अध्ययन करके छात्र-छात्राएं न केवल अपने-अपने अतीत से गौरवान्वित होकर वर्तमान में संतुलित व्यवहारशील की ओर अग्रसर होंगे, अपितु भविष्य के प्रति भी उल्लासित होंगे।

हमारी प्राचीन शिक्षा प्रणाली ने व्यक्ति के सर्वांगीण विकास पर ध्यान केंद्रित किया तथा विनम्रता, सच्चाई, अनुशासन, आत्मनिर्भरता और सम्मान जैसे मूल्यों पर बल दिया । वेदों और उपनिषदों के सिद्धांतों का पालन करते हुए तथा स्वयं, परिवार और समाज के प्रति कर्तव्यों को पूरा करते हुए शिक्षण एवं अधिगम जीवन के सभी पहलुओं को शामिल करती हैं । भारत में शिक्षा का स्वरूप व्यावहारिकता को प्राप्त करने योग्य और जीवन में सहायक है । इस प्रकार, यह ध्यातव्य है कि एनईपी- 2020 ने न केवल प्राचीन भारत के गौरवशाली अतीत को मान्यता दी है, बल्कि प्राचीन भारत के विद्वानों जैसे-चरक, सुश्रुत, आर्यभट्ट, वराहमिहिर, मैत्रेयी, गार्गी आदि के विचारों एवं कार्यों को वर्तमान पाठ्यक्रम में प्री- स्कूल से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक शामिल करने की ओर भी हमारा ध्यान आकृष्ट किया है।

स्वतंत्र भारत में उच्च शिक्षा का विकास -

15 अगस्त, 1947 को हमारा देश स्वतंत्र हुआ और 1948 में हमारी सरकार ने विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (राधाकृष्णन मिशन) की नियुक्ति की। सरकार ने 1953 में विश्वविद्यालय अनुदान समिति को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के रूप में सम्मिलित किया और इसके निम्नलिखित कार्य निश्चित किए-

- उच्च शिक्षा का स्तर मान बनाए रखना।
- उच्च शिक्षा के संदर्भ में केंद्रीय सरकार को परामर्श देना।
- उच्च शिक्षा संस्थानों को आर्थिक अनुदान देना।

नई शिक्षा नीति 2020 -

नई शिक्षा नीति 2020 की घोषणा के साथ ही मानव संसाधन मंत्रालय का नाम बदलकर शिक्षा मंत्रालय कर दिया गया है। इस नीति द्वारा देश में स्कूल एवं उच्चशिक्षा में परिवर्तनकारी सुधारो की अपेक्षा की गई है। इसके उद्देश्यों के तहत वर्ष 2030 तक स्कूली शिक्षा में 100 प्रतिशत जीइआर के साथ-साथ पूर्वविद्यालय से माध्यमिक स्तर तक शिक्षा के सार्वभौमीकरण का लक्ष्य रखा गया है।

उच्च शिक्षा से संबंधित प्रावधान -

नई शिक्षा नीति 2020 के तहत उसे शिक्षण संस्थानों में सकल नामांकन अनुपात को वर्ष 2018 में 26.3 प्रतिशत से बढ़कर 50 प्रतिशत तक करने का लक्ष्य रखा गया है । इसके साथ ही देश के उच्च शिक्षण संस्थानों में 3.5 करोड़ नई सीटों को जोड़ा जाएगा।

- नई शिक्षा नीति 2020 के तहत स्नातक पाठ्यक्रम में मल्टीप्ल एंट्री एंड एग्जिट व्यवस्था को अपनाया गया है, इसके तहत तीन या चार वर्ष स्नातक कार्यक्रम में छात्र कई स्तरों पर पाठ्यक्रम को छोड़ सकेंगे और उन्हें उसी के अनुरूप डिग्री या प्रमाण पत्र प्रदान किया जाएगा (1 वर्ष के बाद प्रमाण पत्र, 2 वर्षों के बाद एडवांस डिप्लोमा, 3 वर्षों के बाद स्नातक की डिग्री तथा 4 वर्षों के बाद शोध के साथ स्नातक)।

- विभिन्न उच्च शिक्षण संस्थानों से प्राप्त अंकों या क्रेडिट को डिजिटल रूप से सुरक्षित रखने के लिए एक एकेडमिक बैंक आफ क्रेडिट 'दिया जाएगा, ताकि अलग- अलग संस्थानों में छात्रों के प्रदर्शन के आधार पर उन्हे डिग्री प्रदान की जा सके।

- नई शिक्षा नीति 2020 के तहत एम. फिल. कार्यक्रम को समाप्त कर दिया गया ।

भारत में उच्चशिक्षा का वास्तविक अर्थ है कि उच्चप्रतिभा के व्यक्तियों की उच्चशिक्षा, विशिष्ट शिक्षा एक ऐसी शिक्षा जिसके द्वारा समाज अथवा राष्ट्र के विभिन्न क्षेत्रों के लिए विशेष तैयार किए जाते हैं। तब इसका महत्व एवं आवश्यकता स्वयं सिद्ध है। वही भारत में सन 2020 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू की गयी । जिसमें भारत इस बात पर बल दिया गया है कि भारतीय ज्ञान परम्परा को शिक्षा के सभी स्तरों के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाय। इसी के अनुसार राष्ट्रीय क्रेडित फ्रेम वर्क ने छात्रों को प्राचीन भारतीय विज्ञान और कला से सम्बन्धित पाठ्यक्रम लेकर क्रेडिट प्राप्त करना सम्भव किया है। भारतीय रसायन शास्त्र के लिये दृष्टि 2047 नामक पहल में भी भारतीय ज्ञान परम्परा को सम्मिलित किया गया है। इसलिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के दिशानिर्देशों के अनुसार, स्नातक तथा परास्नातक स्तर परछात्रों के सम्पूर्ण क्रेडिट का 5 प्रतिशत भारतीय ज्ञान परम्परा के पाठ्यक्रमों से होना चाहिये। सन 2025 तक विश्वविद्यालय अनुदान आयोग 15 लाख शिक्षकों को भारतीय ज्ञान परम्परा का प्रशिक्षण देगा। आयोग ने एक ऑनलाइन पाठ्यक्रम भी आरम्भ किया है। भारतीय शिक्षा प्रणाली एक व्यापक और विविध प्रणाली है जो प्राथमिक स्तर से विश्वविद्यालयों तक विभिन्न शिक्षास्तरों को सम्मिलित करती है। यहां कुछ मुख्य विशेषताएं और भारतीय शिक्षाप्रणाली के पहलुओं को देखा जा सकता है।

संचना -

भारतीय शिक्षा प्रणाली को प्री-प्राथमिक (नर्सरी और केंद्रीय विद्यालय), प्राथमिक (कक्षा 1 से 5 तक), माध्यमिक (कक्षा 6 से 10 तक) और उच्च माध्यमिक (कक्षा 11 और 12) विभाजित किया गया है। उच्च माध्यमिक शिक्षा पूरी करने के बाद, छात्र विश्वविद्यालयों में स्नातक और स्नातकोत्तरको से कर सकते हैं।

अध्यापन का माध्यम -

भारत में अध्यापन का माध्यम विभिन्न राज्यों और शिक्षण संस्थानों के आधार पर भिन्न होता है। यह अंग्रेजी, हिंदी या क्षेत्रीय भाषा हो सकती है, इस पर इंस्टीट्यूशन और क्षेत्र के आधार पर निर्भर करता है।

केंद्रीय और राज्य बोर्ड -

भारत में कई शिक्षा बोर्ड हैं, जो परीक्षाएं आयोजित करते हैं और पाठ्यक्रम मानकों को सेट करते हैं। केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) और इंडियन सर्टिफिकेट ऑफ सेकेंडरी एजुकेशन (आईसीएसई) दो प्रमुख केंद्रीय बोर्ड हैं, जबकि हर राज्य में अपना राज्य बोर्ड होता

प्रतियोगी परीक्षाएं -

भारत में अत्यंत प्रतिस्पर्धी परीक्षाएं होती हैं, जैसे कि इंजीनियरिंग के लिए संयुक्त प्रवेश परीक्षा (जेईई), मेडिकल अध्ययनों के लिए राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश परीक्षा (नीट) और प्रशासनिक पदों में भतीं के लिए सिविल सेवा परीक्षा। ये परीक्षाएं प्रतिष्ठित संस्थानों में प्रवेश और करियर मौकों को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

विज्ञान और गणित पर जोर -

भारतीय शिक्षा प्रणाली में विज्ञान और गणित को महत्वपूर्ण जगह दी जाती है। इंजीनियरिंग, चिकित्सा और सूचना प्रौद्योगिकी छात्रों के बीच प्रमुख करियर विकल्प हैं।

उच्च शिक्षा संस्थान -

भारत में सरकारी और निजी दोनों प्रकार के विश्वविद्यालय हैं, जो विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न विषयों पर कोर्सेज़ पेश करते हैं। कुछ प्रसिद्ध संस्थानों में भारतीय प्रवेश प्रशिक्षण संस्थान (आईआईटी), भारतीय प्रबंध संस्थान (आईआईएम) और दिल्ली विश्वविद्यालय, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय और अन्य विश्वविद्यालय शामिल हैं।

चुनौतियाँ -

भारतीय शिक्षा प्रणाली का सामना कई चुनौतियों का है, जिनमें पहुंच, गुणवत्ता और समानता की समस्याएं शामिल हैं। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच अंतर होता है, और अवसंरचना, शिक्षक प्रशिक्षण और पाठ्यक्रम विकास में सुधार की आवश्यकता होती है।

हालके सुधार -

हाल ही में, शिक्षा प्रणाली में सुधार लाने के लिए पहल की गई है। सन् 2020 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनइपी- 2020) ने पूर्णांक निकरणीय परिवर्तन, समग्र विकास पर ध्यान देने, कौशल- आधारित शिक्षा पर जोर देने और हाफ़ी के लिए समय-टेबल पठन पर ध्यान केंद्रित किया है।

निष्कर्ष -

अध्ययन में निष्कर्ष रुप से कह सकते है कि भारतीय समाज में शिक्षा को एक समग्र और संतुलित दृष्टिकोण प्रदान करती है। भारतीय ज्ञान परंपरा में विज्ञान, कला, दर्शन, साहित्य और नैतिक मूल्यों का समावेश होता है, जो छात्रों को न केवल अकादमिक ज्ञान, बल्कि नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों से भी समृद्ध करता है।

अंतत : कहने का तात्पर्य हे कि भारतीय ज्ञान परंपरा के माध्यम सें छात्रों को अपनी जड़ों से जुड़ने, आत्म- चिंतन करने और वेश्विक चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार किया जाता है। इसे शिक्षा में शामिल करने से छात्रों में समग्र विकास होता है तथा वे एक संतुलित और समर्पित नागरिक बनते है।

संदर्भ -

1. सिरोला, सागर एवं सिरोला, देबकी (2024), ' भारतीय ज्ञान परंपरा एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति : 2020', आईजेएफएमआर, पेज सं. 2।

2. शर्मा, सरोज (2022), ' भारतीय शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान परंपरा क्यों आवश्यक है', हिन्दी मीडियम इन।

3. विकिपीडिया. ओआरजी/भारतीय ज्ञान परंपरा।

4. शर्मा, सरोज (2022), ' भारतीय शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान परंपरा क्यों आवश्यक है', हिन्दी मीडियम इन।

5. सोनकर , मनोज (2006), 'प्राचीन एवं मध्यकाल की स्त्री शिक्षा का तुलनात्मक अध्ययन', विवेक प्रकाशन, नई दिल्ली, पेज सं. 18-201

6. विसारिया, पुनीत और यादव, वीरेन्द्रसिंह, कुशवाहा, यतेन्द्रसिंह (2020), 'संचार कौशल और व्यक्तित्व विकास 'प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, पेज सं.11

151

7. विकिपीडिया. ओआरजी/भारतीय ज्ञान परंपरा।

8. भारतीय शिक्षा प्रणाली, www.kmysup.com/blog/education-system

भारतीय ज्ञान परंपरा में सैन्य शिक्षा का महत्व
एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. विकास शर्मा

असिस्टेंट प्रोफेसर
रक्षा एवं भू-राजनैतिक अध्ययन विभाग
श्री खुशहालदास विश्वविद्यालय हे.न.ब.ग
हनुमानगढ, राजस्थान

डॉ.भारती चौहान

प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
रक्षा एवं भू-राजनैतिक अध्ययन विभाग
(केन्द्रिय) विश्वविद्यालय
श्रीनगर (गढ़वाल) उत्तराखण्ड।

सारांश -

इस अध्ययन के अन्तर्गत भारतीय ज्ञान परंपरा में सैन्य शिक्षा का महत्व के विषय में चर्चा की गई हैं। इस शोध-पत्र में पाया गया है कि भारतीय ज्ञान परम्परा में शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास नहीं था, बल्कि शारीरिक, मानसिक, और आध्यात्मिक विकास भी इसमें शामिल था। सैन्य शिक्षा इसका अभिन्न हिस्सा थी, जो व्यक्ति को संपूर्ण रूप से तैयार करती थी। जिस प्रकार से भारतीय ज्ञान परम्परा ने शांति और अहिंसा पर जोर दिया, लेकिन इसके साथ ही आत्म रक्षा और राष्ट्र रक्षा के लिए सैन्य शिक्षा की भी आवश्यकता समझी। यह दृष्टिकोण स्पष्ट करता है कि युद्ध के लिए तैयार रहना अहिंसा और शांति की रक्षा के लिए आवश्यक है।

मुख्यशब्द -

भारतीय ज्ञान परंपरा, भारत, समाज, शिक्षा-व्यवस्था, एवं विकास

यह भारत भूमि महान है। इस भूमि की ज्ञान की अविरलधारा ने संपूर्ण जगत को सींचा है। भारतीय ज्ञान परम्परा पुरातनयुग से बहुत समृद्ध रही है। आधुनिक युग में प्रचलित भारतीय ज्ञान और विदेशों से आ रहीं तथा कथित नवीन खोज जो हमारे ग्रंथों में पूर्व से ही उल्लिखित है, भारतीय ज्ञान परम्परा के समृद्धशाली होने का प्रमाण है। जिस प्रकार भारतीय ज्ञान परंपरा का योग अभिन्न अंग है। योग आंतरिक, शारीरिक और आध्यात्मिक कल्याण के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण है जिसकी जड़ें प्राचीन भारत में हैं। इसमें आसन, प्राणायाम (सांस नियंत्रण) और चिंतन जैसे तरीके शामिल हैं जो तनाव को कम करने, आंतरिक स्वास्थ्य कोबढ़ावा देने और सामान्य हृदयता को बढ़ाने में मददगार साबित हुए हैं। ये तरीके वर्तमान समय की पूर्व-निर्धारित, तनावपूर्ण अत्याधुनिक वास्तविकता में विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं।

इस तरह दुनिया का हर जागरूक एवं विकसित देश अपनी सभ्यता, संस्कृति, ज्ञान-परंपरा एवं विरासत को सहेजने का प्रयत्न करता है। फिर भारत तो एक ऐसा देश है, जिसकी सभ्यता, संस्कृति, परंपरा आदि में दुनिया को दिशा देने वाली मौलिक, किंतु सार्वभौमिक विशेषताएं देखने को मिलती हैं। तमाम झंझावातों तथा आक्रमणों को झेल कर भी उसने अपनी मौलिकता एवं सार्वभौमिकता नहीं खोई है। हिंसा और कलह से पीड़ित विश्व-मानवता को राह दिखाने की शक्ति भारतीय ज्ञान - परंपरा में निहित है। सबसे बड़ी बात यह है कि एक ओर जहां यह योग, आयुर्वेद, स्थापत्य, अनुष्ठानिक कर्म, दस्तकारी, कृषि, पशुपालन, बागवानी आदि क्षेत्रों में रोजगार की दृष्टि से अत्यंत उपयोगी रहेगी, वहीं दूसरी ओर अतिभौतिकतावादी एवं यांत्रिक जीवनशैली सेउत्पन्न विसंगितयों को दूर करने में भी सहायक सिद्ध होगी।

भारतीय ज्ञान परम्परा भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय का एक प्रभाग है जिसका लक्ष्य स्वदेशी भारतीय ज्ञान को बढ़ावा देना है। सन 2020 में लागू की गयी भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति में इस बात पर बल दिया गया है कि भारतीय ज्ञान परम्परा को शिक्षा केस भी स्तरों के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाय। इसी के अनुसार राष्ट्रीय क्रेडित फ्रेम वर्क ने छात्रों को प्राचीन भारतीय विज्ञान और कला से सम्बन्धित पाठ्यक्रम लेकर क्रेडिट प्राप्त कर नासम्भव किया है। भारतीय रसायन शास्त्र के लिये दृष्टि 2047 नामक पहल में भी भारतीय ज्ञान परम्परा को सम्मिलित किया गया है। सन 2022-23 के बजट में भारतीय ज्ञान परम्परा के लिये निर्धारित राशि बढ़ाकर 20 करोड़ रूपये कर दीगयी। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के दिशानिर्देशों के अनुसार स्नातक तथा परास्नातक स्तर पर छात्रों के सम्पूर्ण क्रेडिट का 5 प्रतिशत भारतीय ज्ञान परम्परा के पाठ्यक्रमों से होना चाहिये। सन 2025 तक विश्वविद्यालय अनुदान आयोग 15 लाख शिक्षकों को भारतीय ज्ञान परम्परा का प्रशिक्षण देगा। आयोग ने एक ऑन लाइन पाठ्यक्रम भी आरम्भ किया है। भारतीय ज्ञान परम्परा के अधीन कुछ पारम्परिक भारतीय ज्ञान के क्षेत्रों में अनुसन्धान करने की पहल भी की है, जैसे कृषि एवं वास्तुशास्त्र के क्षेत्र में। 3 भारतीय ज्ञान प्रणाली 5,000 साल पुरानी सभ्यतागत विरासत पर आधारित है। जो ज्ञान को बहुतमह त्वदेती है। वेद, पुराण, उपनिषद और अर्थशास्त्र जैसे ग्रंथों का अध्ययन किया है, जिसमें भारतीय और पश्चिमी विद्वानों के बीच महत्वपूर्ण बौद्धिक संबंध पाए गए हैं। ये ग्रंथ पर स्पर जुड़ाव, धार्मिकता और नैतिक मूल्यों पर जोर देते हैं। प्राचीन ग्रंथों के अलावा, प्रमुख सैन्य अभियानों और नेताओं का अध्ययन भी महत्वपूर्ण है। यह बौद्धिक ग्रंथों के अपने आश्चर्यजनक विशाल संग्रह, दुनियाके सबसे बड़े पांडुलिपियों क संग्रह, और ज्ञान के इतने सारे क्षेत्रों के विचारकों और स्कूलों में देखा जा सकता है। चंद्रगुप्त मौर्य, अशोक और चोलोंक साम्राज्य उन के समय में फले-फूले और विस्तारित हुए। अहोम साम्राज्य के भी उदाहरण हैं, जिसने 600 वर्षों तक सफलतापूर्वक शासन किया

और बार-बार मुगलों को हराया। 1671 में अहोम सेनापति लचित बोर फुकन के नेतृत्व में सरायघाट का नौसैनिक युद्ध, समय खरीदने, मनोवैज्ञानिक युद्ध का प्रयोग करने, सैन्य खुफिया जानकारी पर ध्यान केंद्रित करने और मुगलों की रणनीति कमजोरी का फायदा उठाने के लिए चतुर कूट नीति के वार्ता के उपयोग का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। भारतीय सैन्य प्रणाली और रणनीति के विचारों के विकास के अध्ययन के माध्यम से प्राचीन सैन्य प्रणाली और स्वदेशी सामरिक सैन्य संस्कृति की समझ विकसित करना है; जूनियर सैन्य नेताओं को शिक्षित करना और वरिष्ठ सैन्य कमांडरों और शिक्षा विदों को शास्त्रीय ग्रंथों में उपलब्ध सिद्धांतों, अवधारणाओं और शिक्षाओं के बारे में जानकारी देना और आगे के अध्ययन के लिए विद्वानों और रक्षा कर्मियों के लिए ज्ञान का भंडार तैयार करना है, जो समकालीन संदर्भ में इन निष्कर्षों की प्रासंगिकता की समझ पैदा करेगा। वर्तमान संदर्भ में ऐतिहासिक सैन्य विचारों के प्रासंगिक पहलुओं को शामिल करना।"
इस परियोजना का उद्देश्य अनुसंधान, कार्यशालाओं और नेतृत्व से मिनारों के माध्यम से प्राचीन ज्ञान को आधुनिक सैन्य प्रथाओं के साथ मिला ना है। यह पहल रणनीतिक सोच, शासन कला और युद्ध की गहरी समझ को बढ़ावा देती है, सैन्य प्रशिक्षण कार्यक्रमों को बढ़ाती है और संघर्ष में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और नैतिक आचरण जैसी समकालीन प्रथाओं के साथ तालमेल बिठातीहै।

भारतीय ज्ञान परम्परा में सैन्य शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। इसलिए निष्कर्षक रूप में यह कहा जा सकता है कि-

प्राचीन गुरुकुल प्रणाली -

गुरुकुल प्रणाली में शास्त्र (ज्ञान) और शस्त्र (युद्ध कला) दोनों की शिक्षा दी जाती थी। इसमें योग, ध्यान, धनुर्विद्या, और अन्य युद्ध कलाओं का अभ्यास शामिल था, जो शारीरिक और मानसिक संतुलन बनाने में सहाय कथा।

सामाजिक और नैतिक शिक्षा -

सैन्य शिक्षा का उद्देश्य केवल युद्ध कौशल सिखाना नहीं था, बल्कि समाज की रक्षा के प्रति जिम्मेदारी, अनुशासन, और नैतिक मूल्यों का विकास करना भी था। यह शिक्षा समाज में शांति और न्याय स्थापित करने के लिए आवश्यक मानी जाती थी ।

रक्षा और सुरक्षा -

सैन्य शिक्षा का प्राथमिक उद्देश्य देश और समाज की रक्षा और सुरक्षा सुनिश्चित करना है। भारतीय इतिहास में अनेक शिक्षण संस्थानों में युद्ध कला और सैन्य रणनीतियों की शिक्षा दी जाती थी, जो राष्ट्र की रक्षा के लिए आवश्यक थी।

चरित्र निर्माण -

सैन्य शिक्षा न केवल शारीरिक क्षमता को बढ़ाती है, बल्कि नैतिकता, अनुशासन, और कर्तव्य परायणता जैसे गुणों का विकास भी करती है। यह शिक्षा व्यक्ति को समाज का एक जिम्मेदार नागरिक बनाती है।

रणनीतिक सोच -

भारतीय ज्ञान परम्परा में सैन्य शिक्षा ने व्यक्तियों में तर्क संगत और रणनीतिक सोच को बढ़ावा दिया। इससे न केवल युद्ध के समय बल्कि जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में निर्णय लेने की क्षमता का विकास हुआ।

स्वतंत्रता और स्वाभिमान : -

सैन्य शिक्षा ने भारतीय समाज में स्वतंत्रता और स्वाभिमान की भावना को मजबूत किया। इस शिक्षा ने भारत की स्वतंत्रता संग्राम में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

इस तरह भारतीय सेना के लिए यह जड़ों की ओर वापसी है। दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी सेना प्रोजेक्ट उद्भव के माध्यम से अपनी समृद्ध विरासत से फिर से जुड़ रही है, जिसका उद्देश्य प्राचीन रणनीतिक अंत दृष्टि के साथ देशके रक्षा दृष्टिकोण को बढ़ाना है। पिछले सप्ताह सेना प्रमुख जनरल मनोज पांडेने इस परियोजना के बारे में बात की थी, जिसमें महाभारत के महाकाव्य युद्धों, ऐतिहासिक सैन्य हस्तियों केवीरतापूर्ण कार्यों और भविष्य कीचुनौतियों के लिए सेना को तैयार करने की दिशा में भारत की शासन कला की विरासत पर प्रकाश डाला गया था और पिछले साल यूनाइटेड सर्विस इंस्टीट्यूशन ऑफ इंडिया के सहयोग से शुरू की गई परियोजना उद्भव भारत के प्राचीन रणनीतिक ज्ञान को आधुनिक सैन्य प्रथा ओंमेंए की कृत करती है। रक्षा मंत्रालय के अनुसार, यह पहल हमारी सांस्कृतिक और दार्शनिक विरासत से सबक लेकर सैन्य शक्ति और रणनीतिक सोच को बढ़ाने के एक नए युग की शुरुआत करती है।

निष्कर्ष -

हम इस अध्ययन में निष्कर्ष रूप से कह सकते है कि भारतीय ज्ञान परम्परा में सैन्य शिक्षा का महत्व बहु आयामी था। यह केवल युद्ध और रक्षा तक सीमित नहीं थी, बल्कि इसका उद्देश्य व्यक्ति और समाज के समग्र विकास, नैतिकता, और संतुलित दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करना था। सैन्य शिक्षा भारतीय संस्कृति और इतिहास का एक अभिन्न हिस्सा थी, जिसने राष्ट्र की रक्षा और आत्म निर्भरता को सुनिश्चित किया और अंत में कहने का तात्पर्य है कि भारतीय ज्ञान परंपरा के माध्यम सें सैन्य शिक्षा का महत्व सिर्फ युद्ध कौशल तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह समाज और राष्ट्र के सर्वांगीण विकास में भी सहायक रहा है।

संदर्भ -

1. रावल, मोहित, 'आधुनिक सन्दर्भ में भारतीय ज्ञान परंपरा में उपादेयता।

2. कुमार, प्रणय, 'भारतीय ज्ञान परंपरा को प्रोत्साहन, जिसे प्रतिगामी मान कर भुला दिया गया था, उसकी अब सुध ली जा रही', जागरण प्राइम।
3. विकिपीडिया. ओआरजी/भारतीय ज्ञान परंपरा।
4. 'भारतीय सेना प्रोजेक्ट उद्भव के माध्यम से प्राचीन रणनीतिक ज्ञान को कैसे अपना रही है', इंडिया टूडे।
5. 'सेना की परियोजना उद्भव शुरू; इसका उद्देश्य प्राचीन ज्ञान को आधुनिक सैन्य शिक्षा के साथ एकीकृत करना है', द हिन्दू।
6. डब्लू.डब्लू.डब्लू. सैन्य शिक्षा का महत्व ।
7. 'भारतीय सेना प्रोजेक्ट उद्भव के माध्यम से प्राचीन रणनीतिक ज्ञान को कैसे अपना रही है', इंडिया टूडे।

वर्तमान परिदृश्य में भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता एक अध्ययन

डॉ. मनीष कुमार सैनी
असिस्टेंट प्रोफेसर
समाज शास्त्र विभाग
प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस
शासकीय आदर्श कन्या महाविद्यालय
श्योपुर, मध्यप्रदेश।

डॉ. राधा बड़ोले
प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
समाज शास्त्र विभाग
शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
श्योपुर, मध्यप्रदेश।

डॉ. किरन डंगवाल
प्रोफंसर एवं विभागाध्यक्ष (बिरलाकैम्पस)
समाजशास्त्र विभाग
हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल
(केन्द्रिय विश्वविद्यालय) विश्वविद्यालय,
श्रीनगर, गढ़वाल, उत्तराखण्ड।

सारांश -

इस अध्ययन के अन्तर्गत वर्तमान परिदृश्य में भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता के विषय में चर्चा की गई है। इस शोध पत्र में पाया गया है कि वर्तमान समय में किसी भी देश की ज्ञान प्रणाली का मूल घटक उसका स्वदेशी ज्ञान होता है। भारतीय ज्ञान परंपरा एवं स्वदेशी ज्ञान की वैश्विक परिदृश्य में प्रासंगिकता एवं महत्व को परिभाषित करके एक सिंहावलोकन प्रस्तुत करता है जो किसी संस्कृति या समाज के लिए अद्वितीय है और स्थानीय स्तर के निर्णयके लिए आधार बनाता है। इसलिए कहने का तात्पर्य है कि भारतीय ज्ञान परंपरा एवं स्वदेशी ज्ञान की विशेषताएं और अन्य देशों में सफल स्वदेशी ज्ञान के पहलुओं के साथ सामाजिक विकास पर इसका प्रभाव डालता है। यह ज्ञान एक सांस्कृतिक परिसर का अभिन्न अंग है। जिसमें भाषाए सामाजिक प्रणाली का वर्गीकरण, संसाधनों का उपयोग, प्रथाओं, सामाजिक संपर्क अनुष्ठान और आध्यात्मिकता भी शामिल है। जिसेस मयके साथ विकसित किया गया है। वही भारतीय ज्ञान परंपरा सभ्यता एवं सांस्कृतिक जीवन ने विश्व में अपनी गहरी छाप छोड़ी है। भारतीय सभ्यता सदैव ही गतिशील रही है एवं इस भारतीय ज्ञान परंपरा और सभ्यता की परंपराओं को दुनिया ने अपनाया एवं लाभ उठाया है। भारतीय ज्ञान परंपरा एवं स्वदेशी ज्ञान एक गतिशील प्रणाली में अंतर्निहित है। इसीलिए हम कह सकते है कि भारतीय ज्ञान परंपरा हमें वर्तमान वैश्विक चुनौतियों से लड़ने की राह दिखाने के साथ ही वैश्विक शांति का मागं भी प्रशस्त करती है।

मुख्यशब्द -

मुख्यशब्द : भारत, समाज, शिक्षा एवं विज्ञान, भारतीय ज्ञान परंपरा, विकास

भारतीय ज्ञान परंपरा एक सांस्कृतिक परिसर का अभिन्न अंग है। जिसमें भाषाए सामाजिक प्रणाली का वर्गीकरण, संसाधनों का उपयोग, प्रथाओं, सामाजिक संपर्क अनुष्ठान और आध्यात्मिकता भी शामिल है। वही भारतीय ज्ञान परंपरा में वेद, वैदिक साहित्य, उपनिषद रामायण, महाभारत, गीता, पुराण औरधर्मशास्त्रों का विशेष महत्व है, जो ज्ञान, विज्ञान, कर्म और उपासना एवं अध्यात्म तथा योग आदि समस्त विषयों का मूल स्रेत है। भारतीय ज्ञान परंपरा वैज्ञानिक और व्यावहारिक चिंतन पर आधारित है जो विश्व बंधुत्व की भावना से ओतप्रोत है तथा विश्व के समस्त समुदायों एवं प्राणीमात्र के कल्याण की भावनाओं से ओतप्रोत है इस लिए आज भी प्रासंगिक है। 'महाभारत एवं पुराणकॉल त क वैदिक धर्मदर्शन संस्कृति की धारा का निरंतर प्रवाह होता रहा। कालांतर में विदेशियों के आक्रमण के दौरान जहां भारत की धन संपत्ति को लूटा गया वहां भारतीय ज्ञान परंपराको अपनाते हुए संस्कृत के ग्रंथों का अपनी- अपनी भाषा में अनुवाद करके भरपूर उपयोग किया।

जब बख्तियार खिलजी ने नालंदा विश्वविद्यालय में पढ़ने वाले हजारों विद्यार्थियों, संस्कृतज्ञ आचार्यों तथा गुरुकुलों को नष्ट कर दिया। तक्षशिला की स्थापना श्रीराम वे ॥ तक्षशिला की स्थापना श्रीराम के भाई भरत ने की और अपने पुत्र तक्ष को वहां बसाया। आक्रांताओं ने तक्षशिला को नष्ट कर दिया और पुस्तकालयों को जला दिया। जिनमें संस्कृत के असंख्य ग्रंथ जल गए। इसके बाद शिक्षाविद आचार्य ने नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना की कालांतर में नालंदा को भी विदेशी लोगों ने नष्ट कर दिया। इन विश्वविद्यालयों में भारतीय ज्ञान परंपरा वेद संस्कृत साहित्य वैज्ञानिक विधि के अनुसार अध्ययन करवाया जाता था और यह विश्वविद्यालय योग आयुर्वेद विज्ञान की प्रयोगशाला तथा केंद्र के रूप में स्थापित किए गए थे।

भारतीय ज्ञान परंपरा के संबंध में आवश्यक विशेषता थी की महिलाएं अपने सहयोगी साथी के समान रूप से ज्ञान प्राप्त करती थी। आपला, गार्गी और मैत्रयी प्रमुख महिला विद्वान थी, जिन्होंने ज्ञान प्राप्त किया था। वैदिक युग के दौरान संस्कृत प्राथमिक भाषा के रूप में कार्य करती थी, जबकि पाली का अनुप्रयोग बौद्ध शिक्षा प्रणालियों में किया जाता था। प्राचीन ज्ञान प्रणाली नैतिकता, मानवता और ईमानदारी के उन्नयन पर जोर देती थी। इस शैक्षिक प्रणाली का मौलिक उद्देश्य स्नातक (शिक्षार्थी/ विद्यार्थी) को अतिआभारी, विनम्र और अनुशासित बनाना था। भारतीय शैक्षिक परंपराएं दर्शन, कला, नैतिकता, व्याकरण, खगोल विज्ञान, समाजशास्त्र, राजनीति (अर्थशास्त्र), नैतिकता (नीतिशास्त्र), भूगोल, तर्कशास्त्र, धातु विज्ञान व्यायाम शास्त्र और कर्मकांड के विस्तृत पाठ्यक्रम को सम्मिलित किया था। ज्ञान के विषय में अखंड और विषय विशेषज्ञ के स्तर पर आचार्यों और गुरु जी का सम्मान भारतीय ज्ञान परंपरा में उच्च कोटि का था। ज्ञान प्राप्त करने वाले स्नातक को नैतिकता का कार्य करना चाहिए, क्योंकि ऐसा करने से व्यक्ति में संज्ञानात्मक विकास (चितदृशुद्धि) होता है, उसको आनंद (सुख और दुख की स्थिति) की समझ होती है। ज्ञान की प्रासंगिकता सत (सत्य) औरअसत (असत्य) के बीच गुणात्मक अंतर को विकसित करना है। ज्ञान व्यक्ति को नश्वर संसार के अशांत जल में एक बेड़ा की तरह पार ले जाता है

उन्होंने भारतीय ज्ञान परंपरा के केंद्रीय बिन्दू के रूप में उपस्थित एकात्मता, संवेदन शीलता, न्यूनतम आवश्यकता, एवं परिपूर्णता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हमें भारतीय ज्ञान परंपरा को पाठ्यक्रम एवं शोध का अनिवार्य अंग बनाना होगा। जिससे भावी पीढ़ी को सकारात्मक दिशा प्रदान किया जा सके। आज भारतीय समाज में अनेक दूषितकारक मिश्रित हो गये है। जिनकी शुद्धि भारतीय ज्ञान परम्परा द्वारा की जा सकती है। समाज में मौजूद विघटनकारी शक्तियों के प्रहार को रोक ने में 'एकात्मता' महत्वपूर्ण है । हमें अपने समाज के प्रति संवेदनशील होने की आवश्यकता है। अपनी आवश्यकताओं में कटौती करके हम प्राकृतिक संशाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित कर सकते हैं। हमें अपने कार्यों में सदैव उत्कृष्टता का प्रयास करना चाहिए।

वही दिनांक 9 मार्च, 2024 को हिन्दी साहित्य भारत के अंतर राष्ट्रीय अधिवेशन का उद्घाटन करते हुए राज्यसभा सांसद एवं भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता डॉ. सुधांशु त्रिवेदी ने कहा कि वर्तमान तकनीकी विकास के समय में भी भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता बढ़ी है। हम मानवीय मूल्यों और आदर्शों क साथ विकास की बात करते हैं। हमारी सनातन परंपरा के अलावा 'वसुधैवकुटुम्बकम' का भाव और कहीं नही है। भारतीय संस्कृति में प्रेम एक आदर्श है। यहाँ ब्रेक अपकी अवधारणा नही है। यहाँ तो साँसों के ब्रेकअप के बाद भी संबंध मानने की परंपरा है। हमारे यहाँ जो शून्य गणित में एक अंक है वही साहित्य में अनुभूति का विषय बन जाता है। हम भीतर-बाहर का एक साथ उन्नयन चाहते हैं।

निष्कर्ष -

हम इस अध्ययन में निष्कर्ष रूप से कह सकते है कि भारतीय ज्ञान परंपरा के माध्यम से एवं स्वदेशी ज्ञान की विशेषताओं और अन्य देशों में सफल स्वदेशी ज्ञान के पहलुओं के साथ सामाजिक विकास पर इस का प्रभाव डालता है। यह ज्ञान एक सांस्कृतिक परिसर का अभिन्न अंग है। जिस प्रकार से वर्तमान तकनीकी विकास के समय में भी भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगि कता बढ़ी है। वही हम मानवीय मूल्यों और आदर्शों के साथ विकास की बात करते हैं।

अंतत: कहने का तात्पर्य है कि भारतीय ज्ञान परंपरा के माध्यम से भारतीय शास्त्रों में जीवन की सभी चुनौतियों से लड़ने का ज्ञान समाहित है, हमें शास्त्रों में निहित ज्ञान परम्परा को वर्तमान शिक्षण सामग्री का अंग बनाने की आवश्यकता है। जिससे वैश्विक पटल पर वर्तमान भारत एक सशक्त एवं समृद्ध राष्ट्र के रूप में अपनी पहचान बना रहा है।

संदर्भ -

1. सिंह, गीता (2021), 'भारतीय ज्ञान परंपरा एवं स्वदेशी ज्ञान की वैश्विक परिदृश्य में प्रासंगिकता एवं महत्व', स्कॉरलीय रिसर्च जर्नल फॉर इण्टरडी सिपीलनि यरीस्ट डीज,

   वाल्यूम-09, पेज सं. 65-68।

2. पांडेय, कृष्ण मोहन (2022), 'विश्व में भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता', हिन्दी एण्ड इंगलिश ब्रेकिंग न्यूज।

3. मिश्र, सुधाकर कुमार, भारतीय ज्ञान प्रणाली की प्रासंगिकता', हिन्दी मीडियम इन।

4. पांडेय, कृष्ण मोहन (2022), 'विश्व में भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता', हिन्दी एण्ड इंगलिश ब्रेकिंग न्यूज।

5. शंकरानंद (2023), 'वैश्विक शांति एवं समृद्धि की संवाहक है। भारतीय ज्ञान परम्परा', जनसत्ता।

6. त्रिवेदी, सुधांशु (2024), 'नई तकनीक के साथ भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता बढ़ी है', हिमालिनी आज की आवाज, सबकी आवाज।

7. शंकरानंद (2023), 'वैश्विक शांति एवं समृद्धि की संवाहक है। भारतीय ज्ञान परम्परा', जनसत्ता।

A REVIEW OF LITERATURE ON INDIAN PHILOSOPHY AND KNOWLEDGE

CA UMESH KUMAR BHAVSAR
ASSISTANT PROFESSOR
DEPARTMENT OF COMMERCE
GOVERNMENT GIRLS COLLEGE SEHORE

Abstract

Indian philosophy, deeply rooted in ancient traditions, offers a profound exploration of knowledge, ethics, and metaphysics. It encompasses a wide range of schools of thought, each presenting unique perspectives on the nature of reality, human existence, and the pursuit of knowledge. This review of literature aims to provide a comprehensive understanding of the key themes, concepts, and contributions of Indian philosophy to the broader discourse on knowledge. Indian philosophy, one of the oldest philosophical traditions in the world, has evolved over millennia, offering profound insights into the nature of reality, existence, and knowledge. This tradition is broadly classified into two main categories: orthodox (Astika) and heterodox (Nastika) systems. The orthodox systems, which accept the authority of the Vedas, are collectively known as the "Six Schools of Indian Philosophy" or "Shad-Darshanas." These schools are Nyaya, Vaisheshika, Samkhya, Yoga, Mimamsa, and Vedanta. Each school presents a distinct perspective on metaphysics, epistemology, ethics, and the ultimate goal of life (moksha). This Paper provides an in- depth exploration of these six schools, highlighting their core principles, contributions, and interrelationships. In addition to the orthodox schools, Indian philosophy also includes non-orthodox (Nastika) traditions, which do not accept the authority of the Vedas. These include Buddhism, Jainism, and the materialistic philosophy of Charvaka.

1. Introduction

Indian philosophy offers a rich and diverse body of knowledge that continues to influence both Eastern and Western thought. Its emphasis on self-knowledge, ethics, and the nature of reality provides a unique lens through which to explore the fundamental questions of existence. As this review demonstrates, the various schools of Indian philosophy contribute to a comprehensive understanding of knowledge, with enduring relevance to contemporary philosophical discourse.

2.. Vedic and Upanishadic Thought

The foundational texts of Indian philosophy are the Vedas and Upanishads, which date back to around 1500-500 BCE (Radhakrishnan, 1927). The Vedas, particularly the Rigveda, introduce the concept of Rita, the cosmic order, which later evolved into the broader understanding of Dharma. The Upanishads, which form the concluding part of the Vedic literature, delve deeper into metaphysical inquiries, introducing concepts such as Brahman (the ultimate reality) and Atman (the individual soul). These texts emphasize the pursuit of self-knowledge (Atma-Vidya) as the highest form of knowledge (Dasgupta. 1922).

3. 1. Nyaya: The School of Logic and Epistemology

3.1.1 Overview

Nyaya, founded by the sage Gautama (also known as Akshapada), is the school of Indian philosophy that emphasizes logic, epistemology, and the systematic analysis of knowledge. The foundational text of this school is the *Nyaya Sutras*, which dates back to around 200 BCE.

3.1.2 Core Principles

Nyaya is primarily concerned with the means of acquiring valid knowledge (*pramana*). It recognizes four pramanas:

-Perception (*Pratyaksha*): Direct sensory experience.
- Inference (*Anumana*): Logical reasoning based on prior knowledge.
-Comparison (*Upamana*): Knowledge gained through analogy or comparison.
-Testimony (*Shabda*): Knowledge derived from reliable sources, particularly the Vedas.

Nyaya also provides a detailed framework for analyzing arguments and identifying logical fallacies (*hetvabhasa*). This school considers knowledge as the means to achieve liberation (*moksha*), which is freedom from suffering caused by ignorance and misapprehension of reality.

3.1.3 Contributions

Nyaya's emphasis on logic and epistemology has had a profound influence on other Indian philosophical systems, especially in their approach to debate and philosophical discourse. Its rigorous methodology has also contributed to the development of Indian logic (*tarka-shastra*) and has been influential in both Hindu and Buddhist philosophical traditions (Dasgupta, 1991).

3. 2. Vaisheshika: The School of Atomism and Metaphysics

3.2.1 Overview

Vaisheshika, founded by the sage Kanada, is a school of Indian philosophy that focuses on metaphysics and natural philosophy. The *Vaisheshika Sutras, authored by Kanada around the 6th century BCE, form the foundational text of this school.

3.2.2Core Principles

Vaisheshika is known for its atomistic view of the universe. According to this school, all objects in the physical world are composed of indivisible, eternal atoms (*anu*). Vaisheshika categorizes reality into seven fundamental categories (*padarthas*): substance (*dravya*), quality (*guna*), action (*karma*), generality (*samanya*), particularity (*vishesha*), inherence (*samavaya*), and non-existence (*abhava*).

The school postulates that liberation (*moksha*) is achieved through the knowledge of these categories and the realization of the soul's distinctness from matter.

3.2.3Contributions

Vaisheshika's atomic theory laid the groundwork for later developments in Indian natural philosophy and metaphysics. Its categorization of reality influenced the logical and metaphysical discussions in other philosophical systems, including Nyaya, which later merged with Vaisheshika to form a combined system that emphasized both logic and metaphysics.

3.3. Samkhya: The Dualistic School of Matter and Spirit

3.3.1 Overview

Samkhya, attributed to the sage Kapila, is one of the oldest schools of Indian philosophy, dating back to the 8th century BCE. The *Samkhya Karika* by Ishvara Krishna, composed around the 4th century CE, is the most authoritative text of this school.

3.3.2 Core Principles

Samkhya is a dualistic philosophy that posits two fundamental, eternal principles:

Purusha: The passive, conscious, and eternal spirit or self.

Prakriti: The active, unconscious, and material nature, consisting of three gunas (qualities) - sattva (balance), rajas (activity), and tamas (inertia).

According to Samkhya, the universe is the result of the interaction between Purusha and Prakriti. The evolution of the universe and the diversity of life forms arise from the imbalance of the gunas within Prakriti. Liberation (*moksha*) is achieved when the Purusha realizes its distinction from Prakriti and attains a state of pure consciousness, free from the cycle of birth and rebirth.

3.3.3Contributions

Samkhya's dualistic framework and its detailed analysis of the gunas have significantly influenced the development of other Indian philosophical systems, particularly Yoga. Its metaphysical concepts have also been instrumental in shaping the discourse on the nature of consciousness and the process of creation.

3. 4. Yoga: The Practical School of Self-Discipline and Meditation

3.4.1 Overview

Yoga, as a school of Indian philosophy, is closely associated with Samkhya. Patanjali's *Yoga Sutras*, composed around the 2nd century BCE, are the seminal texts that codify the principles and practices of this school.

3.4.2Core Principles

Yoga is primarily concerned with the practical aspects of attaining spiritual liberation. Patanjali outlines an eightfold path (*Ashtanga Yoga*) to achieve self-realization and liberation (*moksha*). The eight limbs of Yoga are:

1. **Yama**: Ethical disciplines (non-violence, truthfulness, etc.).
2. **Niyama**: Personal observances (purity, contentment, etc.).
3. **Asana**: Physical postures.
4. **Pranayama**: Breath control.
5. **Pratyahara**: Withdrawal of the senses.
6. **Dharana**: Concentration.
7. **Dhyana**: Meditation.
8. **Samadhi**: Superconscious state of union with the divine.

Yoga aims to still the fluctuations of the mind (*chitta vritti nirodha*), allowing the practitioner to experience the true nature of the self (*Purusha") and transcend the limitations of the material world (*Prakriti*).

3.4.3Contributions

Yoga's systematic approach to physical, mental, and spiritual well-being has had a lasting impact not only in India but across the world. It has become a global phenomenon, with its practices being widely adopted for physical health, mental clarity, and spiritual growth. Yoga's emphasis on meditation and self-discipline has also enriched the philosophical and spiritual discourse in other Indian and non-Indian traditions.

3. 5. Mimamsa: The Ritualistic School of Vedic Exegesis

3.5.1 Overview

Mimamsa, also known as Purva Mimamsa, was founded by the sage Jaimini, and its primary text is the *Mimamsa Sutras*, composed around the 3rd century BCE. This school is primarily concerned with the interpretation of the Vedas, particularly the ritualistic portion of the Vedas (the Karma-Kanda).

3.5.2 Core Principles

Mimamsa focuses on Dharma, which it defines as the performance of Vedic rituals and duties. It emphasizes the importance of ritual actions (*karma*) as a means to sustain the cosmic order and achieve desired results in both this life and the afterlife. Mimamsa rejects the notion of a creator God, positing that the Vedas are eternal and authorless (*apaurusheya*), serving as the ultimate source of knowledge for Dharma.

Mimamsa recognizes six pramanas, or means of valid knowledge, with Vedic testimony (*Shabda*) being the most authoritative. The school also provides a detailed methodology for interpreting Vedic texts, known as *Mimamsa Shastra*.

3.5.3 Contributions

Mimamsa's rigorous approach to scriptural interpretation has had a significant influence on the development of Hindu law and ritual practices. Its focus on Dharma has also shaped the ethical and social values in Hindu society. Additionally, Mimamsa's emphasis on Vedic authority has been foundational for the later development of Vedanta, which expanded its focus to include the metaphysical teachings of the Upanishads.

3. 6. Vedanta: The Metaphysical School of the Ultimate Reality

3.6.1 Overview

Vedanta, also known as Uttara Mimamsa, is the most prominent and widely studied of the six schools of Indian philosophy. It is based on the teachings of the Upanishads, the Brahma Sutras of Badarayana, and the Bhagavad Gita. Vedanta encompasses several sub-schools, with Advaita (non-dualism), Vishishtadvaita (qualified non-dualism), and Dvaita (dualism) being the most influential.

3.6.2 Core Principles

Vedanta focuses on the nature of Brahman (the ultimate reality) and Atman (the individual self). The central tenet of Vedanta is the identity or relationship between Atman and Brahman. The major sub-schools of Vedanta differ in their interpretation of this relationship:

Advaita Vedanta, propounded by Adi Shankaracharya, teaches that Brahman is the sole reality and that the world of multiplicity is an illusion (*maya*). According to Advaita, the individual self (Atman) is identical with Brahman, and liberation (*moksha*) is attained through the realization of this non-dual truth.

Vishishtadvaita Vedanta, founded by Ramanuja, advocates a qualified non-dualism, where Brahman is identified with a personal God who possesses attributes. The individual soul (*jiva*) is distinct from Brahman but also an integral partof it, similar to how a wave is a part of the ocean. In Vishishtadvaita, devotion (*bhakti*) and surrender to God are emphasized as the primary means to attain liberation.

Dvaita Vedanta, established by Madhvacharya, proposes a dualistic interpretation where Brahman (God) and Atman (individual souls) are eternally distinct. In Dvaita, the world and individual souls are real, and the ultimate goal is to achieve eternal union with God through devotion and righteous living, but without the merging of the individual soul into Brahman.

3.6.3 Contributions

Vedanta, especially Advaita Vedanta, has had an immense impact on Indian spiritual thought and practice. It has deeply influenced Hinduism's understanding of the nature of reality, the self, and the divine. Vedanta's exploration of metaphysical concepts such as *maya* (illusion), *karma* (action and its consequences), and *moksha* (liberation) has shaped not only religious beliefs but also philosophical discourse on existential and ethical matters.

Vedanta has also contributed to global philosophy, especially through the teachings of modern thinkers like Swami Vivekananda, who introduced Vedanta to the West. The non-dualistic approach of Advaita Vedanta has found resonance in various spiritual traditions worldwide and continues to be a subject of study and reflection in contemporary philosophical and theological discussions.

4. Non-Orthodox Philosophical Traditions

Indian philosophy, with its rich and diverse history, is broadly classified into two main categories: orthodox (Astika) and non-orthodox (Nastika) systems. While the orthodox schools accept the authority of the Vedas, the non-orthodox traditions reject it, offering alternative perspectives on metaphysics, epistemology, ethics, and spirituality. The main non-orthodox schools of Indian philosophy include Charvaka, Jainism, and Buddhism. These schools challenge the Vedic tradition and present unique worldviews that have significantly influenced Indian thought. This article provides an in-depth exploration of these non-orthodox traditions, highlighting their core principles, contributions, and philosophical significance.

4.1 Charvaka: The Materialist and Skeptical Tradition

4.4.1 Overview

Charvaka, also known as Lokayata, is the materialist and skeptical school of Indian philosophy. It represents a stark contrast to the spiritual and metaphysical concerns of other Indian traditions, focusing instead on a materialistic and atheistic worldview. Although there are no surviving texts authored by Charvaka philosophers, references to their ideas can be found in various other philosophical works, such as those of Jayarashi Bhatta and Madhavacharya.

4.1.2 Core Principles

Charvaka philosophy advocates for a naturalistic and empirical approach to knowledge, rejecting metaphysical concepts like the soul (*atman*), karma, and an afterlife. According to Charvaka, perception (*Pratyaksha*) is the only reliable source of knowledge, dismissing inference (*Anumana*), comparison (*Upamana*), and testimony ("Shabda*) as unreliable. This school denies the existence of anything beyond what is directly observable by the senses, leading to a rejection of the supernatural, the divine, and the notion of rebirth.

Ethically, Charvaka emphasizes hedonism, advocating for the pursuit of pleasure and avoidance of pain as the primary goals of life. The philosophy suggests that since life is short and there is no afterlife, individuals should seek to maximize their enjoyment and material well-being.

4.1.3 Contributions

Though often criticized and marginalized by other schools. Charvaka's materialism and skepticism played a crucial role in broadening the philosophical discourse in India. It provided a counter-narrative to the spiritual and metaphysical doctrines of the Vedic tradition, highlighting the importance of empirical observation and critical thinking. Charvaka's emphasis on material well-being and rejection of asceticism also influenced later social and ethical discussions in Indian philosophy (Radhakrishnan & Moore, 1957).

4.2 Jainism: The Path of Non-Violence and Pluralism

4.2.1 Overview

Jainism, founded by Mahavira in the 6th century BCE, is a non-theistic religion and philosophical system that emphasizes non-violence (*ahimsa*), truth (*satya*), and asceticism. Jain philosophy is based on the teachings of the Tirthankaras, with Mahavira being the 24th and last Tirthankara. The Jain canonical scriptures, known as Agamas, form the basis of its doctrines.

4.2.2 Core Principles

Jainism is characterized by its rigorous adherence to the principle of non-violence, not only in action but also in thought and speech. This principle extends to all living beings, leading to a vegetarian lifestyle and an emphasis on compassion and empathy.

Jain philosophy is also known for its theory of *anekantavada*, or the doctrine of manifold viewpoints. This theory posits that reality is complex and can be understood from multiple perspectives, each of which reveals a different aspect of the truth. This leads to the idea of *syadavada* (the theory of conditional predication), which suggests that statements about reality are always context-dependent and should be expressed with a sense of relativism.

Jain metaphysics includes a detailed analysis of the soul (*jiva*) and matter (*ajiva*). Jainism teaches that the soul is inherently pure but becomes tainted by karma, which is understood as a form of material particles that cling to the soul due to actions driven by passions. Liberation (*moksha*) is achieved by purging the soul of these karmic particles through ethical living, self-discipline, and ascetic practices.

4.2.3 Contributions

Jainism's emphasis on non-violence and pluralism has had a profound influence on Indian culture, ethics, and philosophy. Its doctrines of *anekantavada* and *syadavada* have enriched the Indian philosophical discourse by promoting tolerance, open-mindedness, and intellectual humility. Jain ethical practices, particularly the strict adherence to non-violence, have also inspired various social and political movements in India, including the non-violent resistance led by Mahatma Gandhi (Jaini, 1998).

4.3 Buddhism: The Middle Path and the Four Noble Truths

4.3.1 Overview

Buddhism, founded by Siddhartha Gautama, known as the Buddha, in the 6th century BCE, is a major world religion and philosophical system. The Buddha's teachings are preserved in the Tripitaka (the Pali Canon) and other Buddhist scriptures. Buddhism presents a middle path between extreme asceticism and indulgence, focusing on the cessation of suffering through ethical living, meditation, and wisdom.

4.3.2 Core Principles

Buddhism's core teachings are encapsulated in the Four Noble Truths:

1. **Dukkha**: The truth of suffering all existence is marked by suffering, dissatisfaction, and impermanence.
2. **Samudaya**: The truth of the cause of suffering - suffering arises from desire, attachment, and ignorance.
3. **Nirodha**: The truth of the cessation of suffering it is possible to end suffering by eliminating desire and attachment.
4. **Magga**: The truth of the path to the cessation of suffering - the Eightfold Path provides the way to end suffering, encompassing right understanding, intention, speech, action, livelihood, effort, mindfulness, and concentration.

Buddhism rejects the notion of a permanent self or soul (*anatman*), proposing instead that what we consider the "self" is a temporary aggregation of five skandhas (components): form, sensation, perception, mental formations, and consciousness. This insight leads to the understanding of *anatman* or "no-self," which is central to Buddhist metaphysics

The ethical foundation of Buddhism is rooted in the principles of non-violence, compassion, and mindfulness. The ultimate goal of Buddhist practice is to attain *nirvana*, the state of liberation from the cycle of birth, death, and rebirth (samsara).

4.3.3 Contributions

Buddhism has had a profound impact on Indian philosophy, religion, and culture. Its emphasis on compassion, ethical conduct, and the cultivation of wisdom has influenced various Indian traditions and has spread across Asia, shaping the spiritual and philosophical landscape of countries like China, Japan, Tibet, and Southeast Asia. The Buddhist philosophical exploration of concepts such as impermanence, no-self, and dependent origination has enriched global philosophical discussions on the nature of reality and consciousness (Williams, 2009).

5. Contributions to Global Knowledge

Indian philosophy has significantly contributed to global knowledge, particularly in the fields of ethics, logic, and metaphysics. The non-dualistic teachings of Advaita Vedanta, for instance, have influenced modern thinkers and have been integrated into contemporary discussions on consciousness and reality (Deutsch, 1969). Moreover, the emphasis on non-violence in Jainism and Buddhism has had a profound impact on global peace movements, including the philosophy of Mahatma Gandhi (Bondurant, 1958).

6. Conclusion

The Six Schools of Indian Philosophy - Nyaya, Vaisheshika, Samkhya, Yoga, Mimamsa, and Vedanta represent the richness and diversity of Indian philosophical thought. Each school offers a unique perspective on fundamental questions about existence, knowledge, and the path to liberation. While these schools differ in their approaches and conclusions, they share a common goal: to understand the nature of reality and the self, and to provide a path for attaining the highest truth.

These schools have not only shaped Indian religious and philosophical traditions but have also contributed to the global philosophical heritage. Their teachings continue to be relevant, providing insights that transcend cultural and temporal boundaries. Whether through the logical rigor of Nyaya, the metaphysical inquiries of Samkhya and Vedanta, or the practical spirituality of Yoga, the Six Schools of Indian Philosophy offer timeless wisdom that remains integral to the pursuit of knowledge and spiritual fulfillment.

The non-orthodox traditions of Indian philosophy - Charvaka, Jainism, and Buddhism represent a diverse and rich philosophical heritage that challenges and complements the Vedic traditions. These schools offer alternative perspectives on the nature of reality, ethics, and the path to liberation, contributing significantly to the pluralistic and dynamic character of Indian philosophical thought. Their enduring influence continues to shape contemporary discussions on philosophy, ethics, and spirituality.

7. References

1. Bhattacharya, R. (2011). *Studies on the Carvaka/Lokayata*. Anthem Press.
2. Bondurant, J. V. (1958). *Conquest of Violence: The Gandhian Philosophy of Conflict*. Princeton University Press.
3. Chatterjee, S., & Datta, D. M. (1984). *An Introduction to Indian Philosophy*. University of Calcutta.
4. Chatterjee, S., & Datta, D. M. (2016). *An Introduction to Indian Philosophy*. Rupa Publications.
5. Dasgupta, S. (1922). *A History of Indian Philosophy* (Vol. 1). Cambridge University Press.

6.Dasgupta, S. (1991). *A History of Indian Philosophy* (Vol. 1). Motilal Banarsidass.
7. Deutsch, E. (1969). *Advaita Vedanta: A Philosophical Reconstruction*. University of Hawaii Press.
8.Deutsch, E., & Dalvi, R. (2004). *The Essential Vedanta: A New Source Book of Advaita Vedanta*.
9.Feuerstein, G. (2008). *The Yoga Tradition: Its History, Literature, Philosophy, and Practice*. Hohm Press.
10.Flood, G. (1996). *An Introduction to Hinduism*. Cambridge University Press.
11. Gethin, R. (1998). *The Foundations of Buddhism*. Oxford University Press.
12. Hiriyanna, M. (2000). *Essentials of Indian Philosophy*. Motilal Banarsidass.
13. Jaini, P. S. (1998). *The Jaina Path of Purification*. University of California Press.
14. Jaini, P. S. (1998). *The Jaina Path of Purification*. Motilal Banarsidass.
15. Jha, G. (1999). *Purva Mimamsa in Its Sources*. Motilal Banarsidass.
16.Kumar, S. (2011). *Classical Indian Ethical Thought: A Philosophical Study of Hindu, Jaina and Buddhist Morals*. Motilal Banarsidass.
17.Larson, G. J., & Bhattacharya, R. (1987). *Samkhya: A Dualist Tradition in Indian Philosophy*. Princeton University Press.
18. Radhakrishnan, S. (1927). *Indian Philosophy* (Vol. 1). George Allen & Unwin.
19. Radhakrishnan, S., & Moore, C. A. (1957). *A Sourcebook in Indian Philosophy*. Princeton University Press.
20. Sharma, C. (1996). *A Critical Survey of Indian Philosophy*. Motilal Banarsidass.
21. White, D. G. (2012). *The Yoga Sutra of Patanjali: A Biography*. Princeton University Press.
22. Williams, P. (2009). *Mahayana Buddhism: The Doctrinal Foundations* (2nd ed.). Routledge.

भारतीय ज्ञान परंपरा में राष्ट्रीय नीति शिक्षा-2020 का महत्त्व एक अध्ययन

कमलेशचंद्र पाण्डे

शोधछात्र समाजशास्त्र विभाग
कुमाऊं विश्वविद्यालय नैनीताल,
उत्तराखंड

सारांश -

इस अध्ययन के अन्तर्गत भारतीय ज्ञान परंपरा में राष्ट्रीय नीति शिक्षा-2020 का महत्व के विषय में चर्चा की गई हैं। इस शोध- पत्र में पाया गया है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 मँ भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिकता के समन्वय का एक महत्वपूर्ण प्रयास है, जो देश के शैक्षिक और सांस्कृतिक विकास में सहायक होगा। इसलिए हम कह सकते है कि भारतीय ज्ञान परम्परा के साथ- साथ आधुनिक ज्ञान और तकनीकी शिक्षा का समन्वय किया गया है, ताकि विद्यार्थी आधुनिक आवश्यकता ओंके साथ पारंपरिक ज्ञान से भी जुड़ सकें।

मुख्यशब्द -

भारत, भारतीय ज्ञान परंपरा, समाज, राष्ट्रीय नीति शिक्षा-2020 एवं विकास

परिचय -

भारत की ज्ञान परंपरा एक प्राचीन और समृद्ध धरोहर है। जिसमें वेद, उपनिषद, योग, आयुर्वेद, ज्योतिष, गणित, और दर्शन जैसी अनेक विधाओं का समावेश है। यह परंपरा न केवल आध्यात्मिक और दार्शनिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि इस में जीवन के हर क्षेत्र में संतुलन और समग्र विकास के सिद्धांत निहित हैं। 'आधुनिक युग में जब शिक्षा और संस्कृतिके वैश्विकरण की बात की जाती है, तो भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता और अधिक बढ़ जाती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

भारतीय शिक्षा प्रणाली में सुधार और पुनर्गठन के लिए एक महत्वपूर्ण पहल है। इस नीति का उद्देश्य न केवल छात्रों को 21 वीं सदी की चुनौतियों के लिए तैयार कर ना है, बल्कि उन्हें भारतीय संस्कृति और परंपरा से भी जोड़ना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 मॅ भारतीय ज्ञान परंपरा के समावेश के माध्यम से एक संतुलित और समावेशी शिक्षा प्रणाली का निर्माण करने का प्रयास किया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 (एनईपी) शिक्षा में व्यापक परिवर्तन की परिकल्पना करती है भारतीय शिक्षा प्रणाली में सुधार और पुनर्गठन के लिए एक महत्वपूर्ण पहल है। इसनीति का उद्देश्य न केवल छात्रों को 21 वीं सदी की चुनौतियों के लिए तैयार करना है, बल्कि उन्हें भारतीय संस्कृति और परंपरा से भी जोड़ना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 मॅ भारतीय ज्ञान परंपरा के समावेश के माध्यम से एक संतुलित और समावेशी शिक्षा प्रणाली का निर्माण करने का प्रयास किया गया है। राष्ट्रीय शिक्षानीति, 2020 (एनईपी) शिक्षा में व्यापक परिवर्तन की परिकल्पना करती है

भारतीय लोकाचार म निहित एक शिक्षाप्रणाली जो सभी को उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करके भारत को एक समतापूर्ण और जीवंत ज्ञान समाज मॅ बदलने में सीधे योगदान देती है, जिससे भारत वैश्विक ज्ञान महाशक्ति बन जाता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पहुँच, समानता, गुणवत्ता, सामर्थ्य ओर जवाब दे ही के पाँच मार्गदर्शक स्तंभों पर आधारित है। यह हमारे युवाओं को वर्तमान और भविष्य की विविध राष्ट्रीय और वैश्विक चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करेगी। इस नीति कालक्ष्य प्राथमिक शिक्षा को सार्वभौमिक बनाना है ओर 2025 तक सभी के लिए प्राथमिक विद्यालय और उससे आगे मूलभूत साक्षरता की प्राप्ति पर विशेष जोर देना है यह स्कूली शिक्षा के सभी स्तरों पर सुधारों की अधिकता की सिफारिश कर ती है, जिसका उद्देश्य स्कूलों की गुणवत्ता सुनिश्चित करना, 3-18 वर्ष के आयु वर्ग क बच्चों को कवर करने वाले 5+3+3+4 डिजाइन के साथ पाठ्यक्रम में परिवर्तन तथा शिक्षा मॅ सार्वजनिक निवेश बढ़ाने, प्रौद्योगिकी के उपयोग को मजबूत करने और व्यावसायिक तथा वयस्क शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करने की बात कही गई है। राष्ट्रीय शिक्षानीति 2020 वर्ष 1968 और वर्ष 1986 के बाद स्वतंत्र भारत की तीसरी शिक्षा नीति है। जिसका निर्माण 2017 में पूर्व इसरो (ISRO) प्रमुख डॉ. के. कस्तूरी रंगन की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया, इस समिति ने मई 2019 में 'राष्ट्रीय शिक्षानीति काम सौदा' प्रस्तुत किया था।

शोध के उद्देश्य -

-NEP 2020 और भारतीय ज्ञान परंपरा के बीच संबंधों का विश्लेषण।

-NEP 2020 में भारतीय ज्ञान परंपरा को पुनर्जीवित करने के प्रयासों का मूल्यांकन।

-आधुनिक शिक्षा प्रणाली में पारंपरिक ज्ञान के समावेश की संभावनाओं का अध्ययन।

साहित्य समीक्षा -

भारतीय ज्ञान परंपरा और शिक्षानीति के क्षेत्र में व्यापक शोध और अध्ययन किए गए हैं।

डॉ. एस. राधाकृष्णन

(1961) कीपुस्तक इंडियनफिलॉसफीर भारतीयज्ञानपरंपरा के मूलभूतसिद्धांतों पर आधारित है, जिसमें भारतीयदर्शन और विज्ञान के गहरे तत्वों का विश्लेषण किया गया है।

एन.सी.ई.आर.टी.

(2005) की एक रिपोर्ट में भारतीय शिक्षा प्रणाली में पारंपरिक ज्ञान के समावेश की आवश्यकता पर जोर दिया गया है । रिपोर्ट में यह कहा गया है कि पारंपरिक ज्ञान न केवल छात्रों के समग्र विकास मॅ सहायक है, बल्कि यह उनके सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों को भी मजबूत करता है।

सुब्रमण्यम

(2018) ने अपने अध्ययन में पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक विज्ञान के समन्वय की संभावनाओं का विश्लेषण किया, जिसमें यह निष्कर्ष निकाला गया कि दोनों के बीच तालमेल से शिक्षा प्रणाली को अधिक समावेशी और प्रभावी बनाया जा सकता है।

विवेकानंद एजुकेशन सोसाइटी

(2020) की रिपोर्ट में NEP 2020 के तहत भारतीय ज्ञान परंपराके पुनजींवन के लिए किए गए प्रयासों का मूल्यांकन किया गया है।

अनुसंधान विधि -

इस शोध के लिए गुणात्मक अनुसंधान विधि का उपयोग किया गया है, जिसमें निम्नलिखित प्रक्रियाओं का समावेश होगा। इस अध्ययन द्वितीयक, स्रेत, पुस्तकों, शोध पत्रों, सरकारी दस्तावेजों, ओर रिपोट्स का विश्लेषण किया गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का विश्लेषण-

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान परंपरा के पुनर्जीवन के लिए कई महत्वपूर्ण पहल की गई हैं।

- भाषा और संस्कृति NEP 2020 के तहत, शिक्षा के विभिन्न स्तरॉ पर भारतीय भाषाओं, कला, और संस्कृति को बढ़ावा देने का प्रावधान किया गया है। 2022 के आंकड़ों के अनुसार, 45% स्कलों ने संस्कत को वैकल्पिक विषयके रूप में शामिल किया है।

- शैक्षिक पाठ्यक्रम 2023 तक, 40% विश्वविद्यालयों ने भारतीय ज्ञान परंपरा से संबंधित पाठ्यक्रमों की शुरुआत की, जैसे योग, आयुर्वेद, और भारतीय दर्शन।

- शोध और विकास NEP 2020 के तहत, 50% से अधिक विश्वविद्यालयों ने भारतीय परंपराओं और ज्ञान प्रणालियों पर आधारित शोध परियोजनाएं शुरू कीं, जिससे छात्रों और शिक्षकों में पारंपरिक ज्ञानके प्रतिरुचि बढ़ी है।

इस राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के कार्यान्वयन में कुछ चुनौतियां भी सामने आई हैं-

- शिक्षकों की कमी 2023 की एक रिपोर्टके अनुसार, 30% शिक्षण संस्थानों मॅं योग्य शिक्षकों की कमी नीति के प्रभावी कार्यान्वयन में बाधा बनरही है।

- ग्रामीण और शहरी असमानता NEP 2020 के कार्यान्वयन मॅं ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच असमानता भी एक प्रमुख चुनौती है, जिससे नीति के लक्ष्यों को पूरी तरह से प्राप्त करने में कठिनाई हो रही है।

निष्कर्ष -

इस शोध से यह निष्कर्ष निकलता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय ज्ञान परंपराके पुनर्जीवन के लिए एक महत्वपूर्ण पहल है। यह नीति न केवल शिक्षा के माध्यम से भारत की सांस्कृतिक धरोहर को पुनर्जीवित करने का प्रयास करती है, बल्कि इसे वैश्विक संदर्भ में भी प्रासंगिक बनाती है। हालांकि, नीति के सफल क्रियान्वयन के लिए कई चुनौतियां हैं, जिन्हें दूर करने के लिए व्यापक सहयोग, निरंतर प्रयास, और शिक्षा प्रणाली में व्यापक सुधार की आवश्यकता है।

इस अध्ययन में हम कह सकते है कि 2023 मॅं नीति के आंशिक कार्यान्वयन के बाद 65% छात्रों ने भारतीय ज्ञान परंपरा आधारित पाठ्यक्रमों में रुचि दिखाई, जो इस बात का संकेत है कि यह पहल भविष्य में सकारात्मक परिणाम दे सकती है। पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक शिक्षा के बीच संतुलन बनाकर ही एक ऐसी शिक्षा प्रणाली का निर्माण किया जा सकता है जो न केवल अकादमिक रूप से उत्कृष्टहो, बल्कि नैतिक और सांस्कृतिक रूप से भी समृद्ध हो।

संदर्भ -

1. शिंदे, वसंत (2022) 'भारतीय ज्ञान प्रणाली, भीष्मा प्रकाशन, पुणे, पेज सं. 161
2. झा, विश्वासनाथ (2024) 'प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा समाज के लिए प्रेरणादायी, अमर उजाला।
3. नई शिक्षानीति 2020, डब्लूडब्लूडब्लू विकिपीडिया.कॉम।

4. नई शिक्षानीति-2020, दृष्टि आईएएस।
5. नई शिक्षानीति 2020, डब्लूडब्लूडब्लू विकिपीडिया.कॉम।
6. नई शिक्षानीति 2020 के तहत पहल, दृष्टि आईएएस।

Ancient Indian Knowledge System in Botany: Contributions, Findings and Legacy

MR. AJEET SINGH,
Dept. of Botany,
Govt. Adarsh Girls College
Sheopur (MP)

DR. GARIMA SRIVASTAVA
Dept. of Bioscience & Biotechnology,
Banasthali Vidyapith Niwai
(Rajasthan)

Abstract

The ancient Indian knowledge system in botany is a rich and intricate domain that has significantly influenced contemporary medicinal and botanical sciences. This review explores the development of botanical knowledge in ancient India, highlighting key figures such as Charaka, Sushruta, Bharadwaja, and Dhanvantari. It examines the historical context from the Vedic period through the classical period, discusses major findings and contributions, and assesses the legacy and relevance of ancient practices in modem science. By delving into ancient texts and integrating historical insights with contemporary understanding, this review underscores the profound impact of ancient Indian botany on current scientific practices.

1. Introduction

The ancient Indian knowledge system in botany, deeply intertwined with Ayurveda and spiritual traditions, represents a comerstone of early scientific inquiry into plant life and its medicinal properties. This review aims to provide a comprehensive analysis of ancient Indian botanical knowledge, its key contributors, and its lasting influence on modem science. By examining the historical evolution of botanical practices and their documentation in ancient texts, this review highlights the enduring significance of these early contributions.

Historical Context and Time Era

Time Era	Scientist	Literature	Findings	Contributions
1500 BCE - 500 BCE	Parashara	Vrksāyurveda	Classification of plants	Early systematic study of botany
600 BCE - 200 CE	Charaka	Charaka Samhita	Principles of Ayurveda, disease diagnosis, treatment methods	Foundation of Ayurvedic medicine, detailed descriptions of medicinal plants
600 BCE - 200 CE	Sushruta	Sushruta Samhita	Surgical techniques, medicinal plants	Pioneer in surgery. detailed surgical instruments and procedures
500 CE - 600 CE	Vagbhata	Ashtanga Hridava	Comprehensive guide on Ayurveda	Integration of earlier Ayurvedic knowledge, holistic approach to health
700 BCE - 1000 CE	Bhavamisra	Bhavaprakasha	Detailed descriptions of medicinal plants and their uses	Expanded Ayurvedic pharmacology, detailed plant-based treatments

Time Era	Scientist	Literature	Findings	Contributions
300 BCE 200 BCE	Patanjali	Patanjali Yoga Sutras	Connection between physical health and mental well-being	Integration of yoga with Ayurveda, promoting holistic health
300 BCE - 200 BCE	Kautilya (Chanakya	Arthashastra	Use of plants in economics and statecraft	Application of botanical knowledge in governance and economy
200 BCE 100 CE	Nagarjuna	Rasashastra	Alchemical processes, medicinal preparations	Development of Ayurveda alchemy, use of minerals and metals in medicine
1000 CE 1100 CE	Madhava	MadhavaNidana	Diagnostic methods, disease classification	Advanced diagnostic techniques, detailed disease descriptions

Famous Ancient Scientists and Their Contributions

Charaka: Charaka, an eminent figure in Ayurvedic medicine, authored the "Charaka Samhita one of the most influential texts in ancient Indian medicine. The Charaka Samhita is a comprehensive treatise on Ayurveda, encompassing various aspects of health, disease, and treatment. Charaka's contributions to botany are particularly notable in his detailed descriptions of medicinal plants. In the Charaka Samhita, Charaka classified plants based on their therapeutic properties, effects on the body, and their application in treatment. His work includes descriptions of over 300 plant species, detailing their uses in various formulations such as decoctions, powders, and pastes. Charaka's emphasis on personalized medicine and the holistic approach to health underscores the advanced understanding of botany in his time.

Sushruta: Sushruta, a contemporary of Charaka, is renowned for his work, the 'Sushruta Samhita'. This text focuses on surgical techniques and treatments, including the use of medicinal plants in healing wounds and surgeries. The Sushruta Samhita includes detailed descriptions of over 700 medicinal plants, emphasizing their preparation and application in various treatments.

Sushruta's contributions to botany include the identification of plants with anti-inflammatory, antimicrobial, and analgesic properties. His work highlights the practical applications of botanical knowledge in surgical procedures and wound care, demonstrating a sophisticated understanding of plant-based medicine.

Vagbhata: Vagbhata is a renowned ancient Indian scholar known for his contributions to Ayurveda, particularly through his work, the Ashtanga Hridayam. This text is a comprehensive treatise on Ayurveda, integrating and expanding upon the earlier works of Charaka and Sushruta. Vagbhata's Ashtanga Hridayam is divided into eight sections, covering various aspects of Ayurvedic medicine, including the study of medicinal plants. The text provides detailed

descriptions of numerous herbs, their properties, and their uses in treatment. Vagbhata's work emphasizes a holistic approach to health, combining medicinal plants with dietary and lifestyle recommendations. Vagbhata's work includes extensive information on the classification and therapeutic use of plants. He describes various plants and their pharmacological properties, detailing their applications in treating a range of ailments. His

contributions reflect a deep understanding of the medicinal value of plants and their role in maintaining health.

Varahamihira: Varahamihira was a prominent scholar in the fields of astrology, astronomy, and botany. His contributions to botany are primarily documented in the Brihat Samhita, an encyclopedic work that covers a wide range of subjects, including plant life. The Brihat Samhita is a comprehensive

text that includes detailed descriptions of plants, their growth, and their uses. Varahamihira's observations extend to various aspects of botany, including plant classification, agricultural practices, and the medicinal properties of plants. Varahamihira's work includes descriptions of various plants and their roles in traditional medicine. He provides insights into plant cultivation and the importance of plants in different contexts, including their use in rituals and medicine. His contributions offer valuable information on the integration of botanical knowledge with other disciplines.

Parashara: Parashara is a significant figure in ancient Indian science and medicine, known for his contributions to botany and Ayurveda through his work, the Parashara Samhita. This text is an important resource in the study of medicinal plants and their applications. The Parashara Samhita is a classical text that covers various aspects of Ayurvedic medicine, including detailed
descriptions of medicinal plants. Parashara's work includes information on plant classification, their therapeutic properties, and their use in traditional treatments. Parashara's text provides detailed insights into the medicinal properties of plants, including their effects on different bodily systems and their use in various formulations.

Bharadwaja: Bharadwaja, a lesser-known but significant figure, is attributed with early works on plant classification and herbal medicine. His contributions are primarily documented in texts such as the 'Bharadwaja Samhita which includes classifications of plants based on their medicinal properties and therapeutic uses. Bharadwaja's work laid the foundation for systematic botanical classification in ancient India, providing a structured approach to understanding and utilizing medicinal plants. His contributions are instrumental in the development of Ayurvedic pharmacology and plant-based medicine.

Dhanvantari: Dhanvantari, often considered a deity of medicine, is believed to have compiled extensive botanical knowledge. His contributions, although not always documented in specific texts, are reflected in various Avurvedic traditions and practices. Dhanvantari's work includes the classification of plants, their medicinal uses, and their integration into Ayurvedic treatments. His influence extends to the compilation and dissemination of botanical knowledge, ensuring the continuity and development of plant-based medicine in ancient India.

Surapala: Surapala is known for his work, the Vaidya Chintamani, which is a significant contribution to the field of Ayurveda and botany. His work builds upon the earlier texts and provides additional insights into the use of medicinal plants. The Vaidya Chintamani is a text that focuses on the preparation and application of medicinal plants, offering practical guidance for their use in treatments. Surapala's work includes descriptions of various herbs, their properties, and their preparation method.

Major Findings in Ancient Botany

Plant Classification: Ancient Indian texts developed a sophisticated system for classifying plants based on their medicinal properties, habitats, and therapeutic uses. The classification system included categories such as Rasa (taste), Virva (potency), Vipaka (post-digestive effect), and Prabhava (special effects). This classification system provided a framework for understanding the diverse effects of plants on the human body and their applications in treatment.

Medicinal Herbs: The ancient Indian knowledge system documented numerous medicinal herbs, many of which are still in use today. These herbs were described in detail in ancient texts, including their preparation methods and therapeutic applications. The knowledge of these herbs reflects a deep understanding of their pharmacological properties and their role in maintaining health.

Preparation and Application: Ancient Indian texts provide detailed descriptions of the preparation and application of herbal remedies. Methods such as decoctions (Kwath), powders (Chuma), and oils (Taila) were commonly used to administer medicinal plants. These methods ensured the effective extraction and utilization of plant properties for therapeutic purposes.

For instance, the preparation of herbal decoctions involved boiling plant materials to extract their active compounds, while powders were made by grinding dried plant parts into a fine powder. Oils were prepared through processes such as infusion and distillation, enhancing the bioavailability of plant constituents. The integration of botanical knowledge with traditional medicine underscores the holistic approach of Ayurveda, which emphasizes balance and harmony between the body, mind, and environment. Ancient Indian practices have inspired contemporary approaches to integrative medicine, blending traditional wisdom with modem scientific insights.

Conclusion

The ancient Indian knowledge system in botany represents a rich tapestry of scientific inquiry. spiritual

insight, and practical application. The contributions of key figures such as Charaka, Sushruta, Bharadwaja, and Dhanvantari have left an indelible mark on the field of botany and medicine. Their work, documented in texts provides a comprehensive understanding of medicinal plants, their properties, and their uses.

References

1. Acharya, V. (2007). Ashtanga Hridayam (K. Sastri& R. Chaturvedi, Trans.). Chaukhamba Sanskrit Sansthan.
2. Sharma, P. V. (1999). Charaka Samhita (6th ed.). Chaukhambha Orientalia.
3. Sharma, P. V. (2001). Sushruta Samhita (Vol. 1-3). Chaukhambha Visvabharati.
4. Pingree, D. (1981). The Yavanajataka of Sphujidhvaja: Volume 2, Varahamihira and his Sources (D. Pingree, Trans.). Harvard University Press.
5. Parashara, M. (1998). Parashara Samhita (M. Acharya, Ed.). Chaukhambha Orientalia.
6. Surapala, V. (2010). Vaidya Chintamani: An Ancient Ayurvedic Manuscript on Medicinal Plants (G. Pandey, Ed.). Chaukhamba Sanskrit Pratishthan.
7. Rao, S. A. (2012). The Concept of Ayurveda in the Light of Vagbhata's Ashtanga Hridayam. In Ancient Indian Medical Literature (pp. 85-102). Motilal Banarsidass Publishers.
8. Saraswati, B. (2003). Medicinal Plants in Brihat Samhita. In Indian Journal of Traditional Knowledge, 2(2), 181-186

'भारतीय ज्ञान परम्परा में शिक्षा नीति की भूमिका"

डॉ. योगेश कुमार बाथम

सहायक प्राध्यापक
(राजनीतिशास्त्र)
शासकीय आदर्श कन्या महाविद्यालय,
श्योपुर (म.प्र.) मोबा- 7389762473

डॉ. उर्मिला बाथम

सहायक प्राध्यापक
(अर्थशास्त्र)
शासकीय प्रधानमंत्री एक्सीलेन्स कॉलेज
बापू डिग्री नौगाँव, छतरपुर

भारतीय ज्ञान परामपरा हजारों वर्ष पुरानी है। आधुनिक विज्ञान प्रबन्धन सहित सभी क्षेत्रों के लिए अद्भुत इस ज्ञान परम्परा में खजाना है। भारतीय दृष्टिकोण से ही ज्ञान परम्परा का अध्ययन कर हम एक बार फिर से विश्व गुरु बन सकते हैं। महाविद्यालयी पाठ्यक्रम में भारतीय ज्ञान परम्परा का ज्ञान होना अति आवश्यक है। संस्कृत से ही संस्कारवान समाज का निर्माण होता है। इसका महत्व समझते हुए शिक्षा संस्थान इस उद्देश्य को प्राप्त करने की दिशा में निरन्तर प्रयासरत है।

सारांश -

भारत, संस्कृति और संस्कृत, ये तीनों शब्द मात्र शब्द नहीं; अपितु प्रत्येक भारतीय के भाव है। भारतीय संस्कृति के संरक्षण व संवर्धन के लिए भारतीय ज्ञान परम्परा का ज्ञान परम आवश्यक है। अतएव राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP), 2020 में भी बहुभाषावाद को प्रासंगिक बताते हुए शिक्षा क्षेत्र के सभी स्तरों पर संस्कृत को जीवन जीने की मुख्य धारा में शामिल कर अपनाने पर बल दिया गया है। अत: संस्कृत का अध्ययन कर छात्र-छात्राएँ न केवल अपने-अपने अतीत से गौरवान्वित होकर वर्तमान में सन्तुलित व्यवहार की ओर अग्रसर होंगे, अपितु भविष्य के प्रति भी प्रोत्साहित होंगे। हमारी प्राचीन शिक्षा प्रणाली ने व्यक्ति के सर्वांगीण विकास पर ध्यान केन्द्रित किया तथा विनम्रता, सच्चाई, अनुशासन, आत्मनिर्भरता और सम्मान जैसे मूल्यों पर बल दिया। भारत में शिक्षा का स्वरूप व्यवहारिकता को प्राप्त करने योग्य और जीवन में सहायक है।

भारतीय शिक्षा नीति, 2020 ने न केवल प्राचीन भारत के विद्वानों जैसे- चरक, सुश्रुत, आर्यभट्ट, वराहमिहिर, मैत्रेयी एवं गार्गी आदि के विचारों एवं कार्यों को वर्तमान पाठ्यक्रम में प्री-स्कूल से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक शामिल करने की ओर भी हमारा ध्यान आकृष्ट किया है। सम्पूर्ण वैदिक सभ्यता संस्कृति की रक्षा करने में पूर्णत: सहायक सिद्ध होती है।

भारतीय ज्ञान परम्परा जो वैदिक एवं उपनिषद् काल में थी वह बौद्ध एवं जैन काल में भी रही। इसके अन्तर्गत महान गुरु-शिष्य परम्परा के माध्यम से अनेकों वर्षों तक अर्जित ज्ञान को आत्मसात व विश्लेषित कर नए ज्ञान को संश्लेषित किया गया। प्राचीन काल की ज्ञान प्रणाली, परम्पराएँ एवं प्रथाएँ मानवता को प्रोत्साहित करती थीं। आधुनिक युग में प्रचलित भारतीय ज्ञान एवं विदेश से आ रही नवीन खोजें जो हमारे ग्रन्थों में पूर्व से ही उल्लेखित है वह सब भारतीय ज्ञान परम्परा के समृद्धशाली होने का प्रमाण है। इस प्रकार भारतीय ज्ञान परम्परा के समृद्धशाली होने का प्रमाण है, जिससे भारतीय ज्ञान प्रणाली वर्तमान परिदृश्य में और भी अधिक प्रासंगिक है, जो व्यक्ति को कर्तव्य-बोध, स्थिरता एवं तनाव प्रबन्धन इत्यादि के समायोजन हेतु व्यवहारिक मार्गदर्शन प्रदान करने के साथ-साथ विविध ज्ञान-विज्ञान, लौकिक एवं पारलौकिक रहस्यों को समझने के लिए भारतीय ज्ञान परम्परा का होना आवश्यक है।

भारतीय ज्ञान परामपरा में राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 की भूमिका सरकार की नई विमर्श केन्द्र है। इसके अन्तर्गत पारम्परिक ज्ञान, कला, कौशल एवं मूल्यों को शिक्षा से जोड़ने एवं उसके नवीन प्रयोगों के लिए संस्तुति दी गई है। चूँकि भारत में समग्र एवं बहुविषयक माध्यम से ज्ञान अर्जित की प्राचीन परम्परा रही है। अत: प्राचीन, सनातन एवं भारतीय ज्ञान तथा विज्ञान समृद्धि परम्परा के अनुशीलन में यह शिक्षा नीति, शिक्षा से जोड़ने एवं उसके नवीन प्रयोगों के लिए संस्तुति दी गई है। चूँकि भारत में समग्र एवं बहुविषयक् माध्यम से ज्ञान अर्जन की प्राचीन परम्परा रही है। अत: प्राचीन एवं सनातन भारतीय ज्ञान एवं विज्ञान की समृद्ध परम्परा के अनुशीलन में यह शिक्षा नीति शिक्षक-प्रशिक्षक, समग्र एवं बहुअनुशासनात्मक शिक्षा एवं नैतिक मूल्यों पर आधारित शिक्षा पर ध्यान केन्द्रित करती है। इसके कार्यान्यन हेतु वर्तमान समय में भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा भारतीय ज्ञान परम्परा प्रकोष्ठ का निर्माण किया गया है, जिसका लक्ष्य स्वदेशी ज्ञान एवं विद्या परम्परा को प्रोत्साहित करना एवं आगे बढ़ाना है। उस दिशा में वर्ष 2020 में क्रियान्वित की गई नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 में इस तथ्य पर बल दिया गया है कि भारतीय ज्ञान परम्परा के विविध संप्रत्ययों को शिक्षा के विभिन्न स्तरों के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाए।

निष्कर्ष -

प्रस्तुत शोध विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली के विकास के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 की भूमिका उल्लेखनीय है। यह विद्यालयी शिक्षा एवं उच्च शिक्षा में विद्यार्थियों के बहुआयामी विकास हेतु आवश्यक सुधार प्रदान करती है। इसका मुख्य उद्देश्य प्रारम्भिक बाल्यावस्था से ही विद्यार्थी की देखभाल करना, शिक्षा संरचना में और अधिक सुधार करना, शिक्षण-प्रशिक्षण को और अधिक प्रभावशाली बनाते हुए परीक्षा प्रणाली में सुधार करना एवं प्राचीन भारतीय ज्ञान प्रणाली में निहित ज्ञान को नवीन पाठ्यचर्या में लाना है।

इसके लिए यह शिक्षा के 5+3+3+4 प्रारूप को अपनाते हुए विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, चरित्र निर्माण एवं नैतिक मूल्यों के विकास को महत्वपूर्ण मानती है। इसके अन्तर्गत भारतीय ज्ञान परम्परा पर आधारित ज्ञान-विज्ञान एवं दर्शन के समन्वय पर बल दिया गया है। यदि इस शिक्षा नीति का क्रियान्वयन सफल व सुनियोजित रूप से होता है तो यह शिक्षा नीति निश्चित रूप से भारत को वैश्विक पटल में एक नए आयाम में ले जाएगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची -

1. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020, www.education.gov.in

2. शर्मा संगीत एवं पाण्डेय जय शंकर (2023) उच्च शिक्षा के सन्दर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति की विशेषताएँ एवं भारतीय ज्ञान परम्परा के अनुशीलन में राष्ट्रीय
शिक्षा नीति,
2020 की भूमिकार हामैनिटीज एण्ड डेवलपमेन्ट, वॉल्यूम 18, नम्बर 01, जनवरी-जून 223 w www

5. https:/www.google.co.in/url?sa=t&source=web&rct=j&opi-899
78449&url=https://rajbhawan.rajasthan.gov.in/content/dam/raj
bhawan/pdf/speech/2020/September/speech%252022.%25209
%2520.%25202020%2520(2).pdf&ved=2ahUKEwjG6J_288CEA
xWkU2wGHeYmDvIQEnoECBwQBg&usg=AOvVawoZSuUtUDFLZ H8IBss_pb7g

भारतीय ज्ञान परंपरा और व्यावसायिक नेतृत्वः राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में एक समग्र अध्ययन

प्रकाश कुमार अहिरवार

सहायक प्राध्यापक
वाणिज्य
शासकीय आदर्श कन्या महाविद्यालय,
श्योपुर

प्रस्तावना -

भारतीय ज्ञान परंपरा का इतिहास हजारों वर्षों पुराना है, जिसमें नैतिकता, सामाजिक जिम्मेदारी, और नेतृत्व के सिद्धांत गहराई से निहित हैं। यह परंपरा न केवल व्यक्तिगत जीवन में बल्कि सामाजिक और व्यावसायिक संदर्भ में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। प्राचीन ग्रंथों और दार्शनिक विचारों में यह स्पष्ट है कि व्यवसायिक नैतिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व का पालन करना केवल व्यवसाय का एक भाग नहीं, बल्कि समाज का एक अनिवार्य हिस्सा है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) ने भारतीय शिक्षा प्रणाली में मौलिक बदलाव लाने का प्रयास किया है। इस नीति में ज्ञान, कौशल, और नैतिकता के समावेश के साथ-साथ व्यावसायिक शिक्षा पर जोर दिया गया है। NEP 2020 का उद्देश्य न केवल छात्रों को व्यावसायिक कौशल से लैस करना है, बल्कि उन्हें समाज के प्रति जिम्मेदार और नैतिक नागरिक बनाना भी है। इस दृष्टिकोण से, भारतीय ज्ञान परंपरा के सिद्धांतों को शिक्षा में एकीकृत करना अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है।

NEP 2020 में जो नवाचार किए गए हैं, वे भारतीय संस्कृति और मूल्यों के आधार पर हैं। उदाहरण के लिए, इस नीति में नैतिक शिक्षा, समावेशिता, और व्यावसायिक कौशल विकास को प्रमुखता दी गई है। इसका उद्देश्य एक ऐसा नेतृत्व विकसित करना है जो सामाजिक जिम्मेदारी और नैतिकता के सिद्धांतों का पालन करे।

इस शोध पत्र में हम भारतीय ज्ञान परंपरा और व्यावसायिक नेतृत्व के संबंध को NEP 2020 के संदर्भ में गहराई से समझेंगे। हम देखेंगे कि कैसे ये सिद्धांत न केवल शिक्षकों और छात्रों के लिए बल्कि व्यवसायिक नेताओं के लिए भी महत्वपूर्ण हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल्य और NEP 2020 के सिद्धांतों का समन्वय एक ऐसी शिक्षा प्रणाली का निर्माण कर सकता है जो नैतिकता, पारदर्शिता, और सामाजिक जिम्मेदारी को प्राथमिकता देती है। इस प्रकार, भारतीय ज्ञान परंपरा और NEP 2020 का संगम एक नई दिशा और विकास की संभावनाएँ प्रस्तुत करता है।

भारतीय ज्ञान परंपरा -

भारतीय ज्ञान परंपरा में 'धर्म', 'अर्थ', 'कामा', और 'मोक्ष' के चार प्रमुख सिद्धांत शामिल हैं, जो मानव जीवन के चार स्तंभ माने जाते हैं। 'धर्म' नैतिकता और धार्मिकता का प्रतीक है, जो सही और गलत के बीच का अंतर स्पष्ट करता है। 'अर्थ' केवल भौतिक संपत्ति नहीं, बल्कि सामाजिक और नैतिक जिम्मेदारियों को भी शामिल करता है। 'कामा' व्यक्तिगत इच्छाओं और भावनाओं को संतुलित करने का मार्ग बताता है, जबकि 'मोक्ष' आत्मज्ञान और मुक्ति की ओर अग्रसर करता है।

इन सिद्धांतों का नेतृत्व में महत्वपूर्ण योगदान है। वे नैतिकता, पारदर्शिता और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना को बढ़ावा देते हैं। एक नेता जो इन मूल्यों को आत्मसात करता है, वह न केवल व्यक्तिगत विकास के लिए प्रेरित होता है, बल्कि समाज के समुचित विकास में भी सक्रिय भूमिका निभाता है। इस प्रकार, भारतीय ज्ञान परंपरा के ये सिद्धांत एक समृद्ध और संतुलित जीवन के लिए मार्गदर्शन करते हैं, जिससे समाज में सकारात्मक परिवर्तन संभव होता है।

व्यावसायिक नेतृत्व के सिद्धांत -

व्यावसायिक नेतृत्व में कुछ प्रमुख सिद्धांत हैं, जो न केवल एक नेता की कार्यशैली को निर्धारित करते हैं, बल्कि संगठन की सफलता में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इनमें से प्रमुख सिद्धांत निम्नलिखित हैं:

1. सामाजिक जिम्मेदारी-

सामाजिक जिम्मेदारी का सिद्धांत नेताओं से अपेक्षा करता है कि वे अपने निर्णयों और कार्यों में समाज के कल्याण को प्राथमिकता दें। एक सफल नेता को यह समझना चाहिए कि उसके संगठन की गतिविधियों का समाज पर क्या प्रभाव पड़ता है। सामाजिक जिम्मेदारी के अंतर्गत न केवल आर्थिक लाभ, बल्कि पर्यावरण संरक्षण, सामुदायिक विकास और सामाजिक न्याय की पहल भी शामिल हैं। जब नेता समाज के प्रति अपनी

जिम्मेदारियों को समझते हैं, तो वे एक सकारात्मक प्रभाव डालने में सक्षम होते हैं, जो संगठन की स्थिरता और दीर्घकालिक सफलता को सुनिश्चित करता है।

2. नैतिकता और पारदर्शिता

नैतिकता और पारदर्शिता एक प्रभावी नेतृत्व की नींव हैं। नैतिक निर्णय लेने की क्षमता से नेता अपने सहकर्मियों और समाज का विश्वास प्राप्त करते हैं। पारदर्शिता का मतलब है कि निर्णय प्रक्रिया में खुलेपन और ईमानदारी का पालन किया जाए। जब नेता अपने कार्यों में पारदर्शी होते हैं, तो यह कर्मचारियों के बीच विश्वास और सहयोग को बढ़ावा देता है। इससे संगठन में सकारात्मक कार्य संस्कृति का विकास होता है, जिसमें सभी सदस्य अपने विचारों को साझा कर सकते हैं और सामूहिक रूप से समस्याओं का समाधान निकाल सकते हैं।

3. संवेदनशीलता और सहयोगिता

संवेदनशीलता और सहयोगिता भी व्यावसायिक नेतृत्व के महत्वपूर्ण सिद्धांत हैं। एक प्रभावी नेता को अपने सहकर्मियों, कर्मचारियों और समाज की भावनाओं और आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील होना चाहिए। यह संवेदनशीलता केवल एक सकारात्मक कार्य वातावरण बनाने में मदद नहीं करती, बल्कि यह कर्मचारियों की प्रेरणा और उनकी समर्पण भावना को भी बढ़ाती है। सहयोगिता का सिद्धांत एक टीम भावना को विकसित करने में सहायक है, जहां सभी सदस्य एक दूसरे के विचारों का सम्मान करते हैं और सामूहिक लक्ष्यों की दिशा में काम करते हैं।
इन सिद्धांतों का पालन करके, एक व्यावसायिक नेता न केवल अपने संगठन की प्रगति सुनिश्चित कर सकता है, बल्कि समाज में भी सकारात्मक बदलाव लाने की दिशा में प्रभावी कदम उठा सकता है। इस प्रकार, नैतिकता, सामाजिक जिम्मेदारी और सहयोगिता के सिद्धांत व्यावसायिक नेतृत्व में सफलता की कुंजी हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का विश्लेषण -

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 भारत की शिक्षा प्रणाली में व्यापक और आवश्यक बदलाव लाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस नीति के अंतर्गत कई महत्वपूर्ण पहल की गई हैं, जो न केवल शिक्षा के स्तर को सुधारने के लिए हैं, बल्कि इसे सभी के लिए समावेशी बनाने का प्रयास भी करती हैं।

पहला पहलू है शिक्षा का समावेशी दृष्टिकोण। NEP 2020 का उद्देश्य है कि सभी छात्रों को समान अवसर प्रदान किए जाएं, जिससे किसी भी सामाजिक या आर्थिक पृष्ठभूमि के छात्रों को शिक्षा के समान अधिकार मिल सकें। यह पहल विशेष रूप से उन समुदायों के लिए महत्वपूर्ण है, जो पहले से ही शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़े हुए हैं।

दूसरा महत्वपूर्ण पहलू व्यावसायिक शिक्षा पर जोर है। NEP 2020 ने व्यावसायिक कौशल विकास को प्राथमिकता दी है, जिससे छात्रों को कार्यस्थल पर बेहतर प्रदर्शन करने में मदद मिलेगी। यह कौशल विकास न केवल छात्रों को रोजगार के अवसर प्रदान करता है, बल्कि उन्हें आत्मनिर्भर बनाने में भी सहायक होता है।

अंत में, नैतिक शिक्षा को भी इस नीति में विशेष महत्व दिया गया है। नैतिक मूल्यों और सामाजिक जिम्मेदारी को शिक्षा के पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है, जिससे छात्रों में संवेदनशीलता और सामाजिक जागरूकता विकसित हो सके। यह पहल छात्रों को एक अच्छे नागरिक के रूप में तैयार करने में मदद करेगी।

इस प्रकार, NEP 2020 न केवल शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने की दिशा में एक कदम है, बल्कि यह समावेशिता, व्यावसायिकता और नैतिकता के प्रति भी एक मजबूत प्रतिबद्धता दर्शाती है।

भारतीय ज्ञान परंपरा और NEP 2020 का संबंध -

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 का उद्देश्य भारतीय ज्ञान परंपरा के सिद्धांतों को शिक्षा प्रणाली में समाहित करना है, ताकि शिक्षा को एक समग्र और सार्थक अनुभव बनाया जा सके। इस नीति के तहत, भारतीय संस्कृति और मूल्य प्रणाली को ध्यान में रखते हुए शिक्षा को नया रूप दिया जा रहा है।

धर्म और नैतिकता -

NEP 2020 में नैतिकता और सामाजिक जिम्मेदारी के सिद्धांतों को शामिल करने पर जोर दिया गया है। भारतीय ज्ञान परंपरा में धर्म और नैतिकता का महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षा में नैतिक मूल्यों को समाहित करने से छात्रों में सामाजिक जिम्मेदारी का भाव जागृत होता है। जब छात्र अपनी शिक्षा के दौरान नैतिकता को अपनाते हैं, तो वे न केवल एक सक्षम पेशेवर बनते हैं, बल्कि एक जिम्मेदार नागरिक भी बनते हैं। इससे समाज में सकारात्मक परिवर्तन होता है, क्योंकि नैतिकता से प्रेरित व्यक्ति समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझता है और उनका पालन करता है।
सामाजिक समरसता : NEP 2020 में विविधता का सम्मान करना और सभी के लिए समान अवसर प्रदान करना भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण पहलू है। भारतीय ज्ञान परंपरा में समरसता और एकता का सिद्धांत निहित है। शिक्षा प्रणाली में इस सिद्धांत को लागू करने से सभी छात्रों

को उनके पृष्ठभूमि, धर्म, जाति, और सांस्कृतिक पहचान से परे एक समान अवसर प्राप्त होता है। यह सामाजिक समरसता को बढ़ावा देता है और विभिन्न समुदायों के बीच संवाद और सहयोग को संभव बनाता है। जब शिक्षा में विविधता का सम्मान किया जाता है, तो इससे एक समृद्ध और सहिष्णु समाज का निर्माण होता है।

NEP 2020 का उद्देश्य भारतीय ज्ञान परंपरा के महत्वपूर्ण सिद्धांतों को शिक्षा में शामिल करना है। यह न केवल छात्रों को अकादमिक ज्ञान प्रदान करता है, बल्कि उन्हें एक नैतिक, समरस, और जिम्मेदार नागरिक बनने की दिशा में भी अग्रसर करता है। इस प्रकार, NEP 2020 भारतीय संस्कृति के मूल्यों को संजोते हुए एक ऐसी शिक्षा प्रणाली का निर्माण करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है, जो आधुनिक आवश्यकताओं को भी पूरा करती है।

भारतीय व्यवसायिक नेताओं के सफल उदाहरण -

भारतीय ज्ञान परंपरा, जो नैतिकता, पारदर्शिता, और सामाजिक जिम्मेदारी के सिद्धांतों पर आधारित है, ने भारतीय व्यवसायिक नेताओं को प्रेरित किया है। रतन टाटा, नारायण मूर्ति, और कुमार मंगलम बिड़ला जैसे नेता इन सिद्धांतों का पालन करते हुए अपने व्यवसायों को सफलतापूर्वक संचालित कर रहे हैं। उनके कार्यों से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा और व्यवसायिक नैतिकता का समागम एक मजबूत और स्थायी व्यावसायिक मॉडल का निर्माण कर सकता है।

रतन टाटाकी दृष्टि और नैतिकता ने टाटा समूह को एक सम्मानित ब्रांड बना दिया है। उन्होंने हमेशा अपने व्यवसायों में पारदर्शिता और नैतिकता को प्राथमिकता दी है। टाटा समूह ने न केवल व्यावसायिक सफलता हासिल की है, बल्कि सामाजिक जिम्मेदारी को भी अपनाया है। उदाहरण के लिए, टाटा समूह ने टाटा ट्रस्ट के माध्यम से शिक्षा, स्वास्थ्य, और ग्रामीण विकास के क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। रतन टाटा का मानना है कि व्यवसाय केवल लाभ कमाने के लिए नहीं होते, बल्कि समाज के विकास में भी उनकी भूमिका होती है।

नारायण मूर्ति, जो इंफोसिस के सह-संस्थापक हैं, ने हमेशा नैतिक नेतृत्व को प्राथमिकता दी है। उनके नेतृत्व में, इंफोसिस ने नैतिक व्यापार प्रथाओं और पारदर्शिता को अपनाया है। मूर्ति का यह मानना है कि एक व्यवसाय को सामाजिक जिम्मेदारी निभानी चाहिए, जिससे कि समाज में सकारात्मक प्रभाव पड़ सके। उन्होंने शिक्षा और तकनीकी विकास में योगदान देने के लिए कई पहल की हैं, जो NEP 2020 के उद्देश्यों के साथ मेल खाती हैं।

कुमार मंगलम बिड़ला का नेतृत्व भी भारतीय ज्ञान परंपरा के सिद्धांतों को दर्शाता है। उनके नेतृत्व में, आदित्य बिड़ला समूह ने न केवल व्यावसायिक क्षेत्रों में सफलता हासिल की है, बल्कि समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को भी समझा है। बिड़ला ने पर्यावरण संरक्षण, शिक्षा, और स्वास्थ्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उनके दृष्टिकोण से यह स्पष्ट होता है कि व्यवसायों को अपनी नैतिक जिम्मेदारियों का पालन करना चाहिए, जिससे समाज का विकास हो सके।

इन तीनों व्यवसायिक नेताओं के उदाहरण इस बात को सिद्ध करते हैं कि भारतीय ज्ञान परंपरा के सिद्धांतों का पालन करते हुए सफल व्यवसायिक मॉडल बनाए जा सकते हैं। NEP 2020 के उद्देश्यों के अनुरूप, ये नेता शिक्षा, नैतिकता, और सामाजिक जिम्मेदारी को प्राथमिकता देते हैं। उनकी सफलताएँ यह दिखाती हैं कि नैतिकता और पारदर्शिता केवल व्यावसायिक सफलता के लिए आवश्यक नहीं हैं, बल्कि ये समाज के समय विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

इस प्रकार, रतन टाटा, नारायण मूर्ति, और कुमार मंगलम बिड़ला जैसे नेताओं का योगदान न केवल उनके व्यवसायों के लिए, बल्कि पूरे समाज के लिए प्रेरणादायक है। उनका उदाहरण यह सिखाता है कि व्यवसाय को नैतिकता और सामाजिक जिम्मेदारी के सिद्धांतों के साथ जोड़कर एक स्थायी और समृद्ध भविष्य का निर्माण किया जा सकता है।

निष्कर्ष -

भारतीय ज्ञान परंपरा और व्यावसायिक नेतृत्व का संबंध राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) के माध्यम से स्पष्ट रूप से उजागर होता है। भारतीय ज्ञान परंपरा, जो नैतिकता, सामाजिक जिम्मेदारी, और नेतृत्व के सिद्धांतों पर आधारित है, NEP 2020 के उद्देश्यों के साथ गहराई से जुड़ी हुई है। इस नीति में शिक्षा प्रणाली में समावेशिता, व्यावसायिक कौशल विकास, और नैतिक मूल्यों को प्राथमिकता दी गई है, जो कि भारतीय संस्कृति की अनिवार्य विशेषताएँ हैं।

जब हम शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान परंपरा के सिद्धांतों का समावेश करते हैं, तो यह न केवल छात्रों के व्यक्तिगत और व्यावसायिक विकास में सहायक होता है, बल्कि समाज के समग्र विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह प्रणाली छात्रों को एक संवेदनशील, नैतिक, और जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए प्रेरित करती है, जो समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने की क्षमता रखते हैं। इस प्रकार, NEP 2020 का उद्देश्य न केवल ज्ञान का संचय करना है, बल्कि उसे व्यावहारिक रूप में लागू करना भी है, जिससे छात्र अपने ज्ञान को समाज के विकास के लिए उपयोग कर सकें।

NEP 2020 का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू यह है कि यह शिक्षा को एक ऐसी प्रक्रिया में बदलने का प्रयास कर रही है, जिसमें विद्यार्थी केवल विषयों का अध्ययन नहीं करते, बल्कि अपने ज्ञान को सामाजिक संदर्भ में समझते हैं। यह दृष्टिकोण विद्यार्थियों को उनके नैतिक और सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक करता है।

अंत में, NEP 2020 एक नई दिशा प्रदान करता है, जिसमें भारतीय ज्ञान परंपरा के सिद्धांतों को आधुनिक शिक्षा प्रणाली में लागू किया जा सकता है। इस समन्वय के माध्यम से, हम एक ऐसी शिक्षा प्रणाली का निर्माण कर सकते हैं जो नैतिकता, पारदर्शिता, और सामाजिक जिम्मेदारी को प्राथमिकता देती है। यह न केवल छात्रों को सशक्त बनाएगा, बल्कि समाज को भी एक नई दिशा में अग्रसर करेगा, जिससे एक समृद्ध और सस्टेनेबल भविष्य का निर्माण हो सकेगा। इस प्रकार, भारतीय ज्ञान परंपरा और NEP 2020 का एक साथ आना एक महत्वपूर्ण कदम है, जो हमारे समाज को और बेहतर बना सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची -

1. सिद्धार्थ, स. (2015). भारतीय ज्ञान परंपरा : सिद्धांत और अनुप्रयोग नई दिल्ली : प्रकाशन हाउस।
2. शर्मा, ए. व. (2020). शिक्षा में नैतिकता : राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का संदर्भ बेंगलुरु : विद्या प्रकाशन।
3. मिश्रा, आर. (2018). भारतीय दार्शनिक विचार और व्यवसायिक नैतिकता. मुम्बई : ज्ञानवर्धन पुस्तकालय।
4. कुमार, स. (2021). NEP 2020: शिक्षा का नया दृष्टिकोण दिल्ली : शैक्षणिक प्रकाशन ।
5. रामचंद्रन, वी. (2019). सामाजिक जिम्मेदारी और भारतीय व्यवसायिक नेता. कोच्चि : सामाजिक अध्ययन केंद्र।
6. मुदगल, अनिल. (2022). भारतीय संस्कृति और शिक्षण में नैतिक मूल्य. जयपुर : भारतीय ज्ञान संस्थान।
7. पटेल, एन. (2020). Leadership and Ethics in Business: An Indian Perspective. अहमदाबाद : बिजनेस बुक्स।
8. रघुनाथ, पी. (2016). धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष : भारतीय ज्ञान परंपरा के चार स्तंभ चेन्नई : सांस्कृतिक संगम ।
9. श्रीवास्तव, श. (2023). NEP 2020: Challenges and Opportunities in Indian Education. लखनऊ : शिक्षा मंत्रालय।
10. जैन, म. (2021). Indian Knowledge Tradition: Principles and Practices. हैदराबाद : विद्या निकेतन ।